रविवार

09 अगस्त 2026

- देहरादून
- वर्ष 34
- अंक 197
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

आर.एन.आई. : 59626/94

34 साल से देहरादून का विश्वास

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

भारी बारिश का अलर्ट, 6 जिलों में खतरा

उत्तराखंड में 'हाई अलर्ट'

तीन दिन भारी बारिश

- दून, नैनीताल, बागेश्वर और चंपावत में रविवार को बारिश की चेतावनी
- भूस्खलन और चट्टानें खिसकने का है डर, चेतावनी जारी
- सूबे के छह जनपदों में भारी से बहुत भारी बारिश होने का है अंदेशा

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में मानसून अगले तीन दिन फिर मुश्किलें बढ़ाने वाला है। मौसम विज्ञान केंद्र ने 11 अगस्त तक प्रदेश में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। रविवार को देहरादून समेत छह जिलों में भारी से बहुत भारी बारिश की आशंका है, जबकि 10 अगस्त को देहरादून, नैनीताल, बागेश्वर और चंपावत में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने कई स्थानों पर गरज–चमक के साथ आकाशीय बिजली गिरने की भी चेतावनी दी है।

लगातार बारिश के चलते पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन, चट्टान गिरने और सड़क पर मलबा आने का खतरा बढ़ गया है। नदी–नालों का जलस्तर अचानक बढ़ने की आशंका को देखते हुए लोगों को जलस्रोतों से दूर रहने की सलाह दी गई है। मौसम विभाग ने खराब मौसम में अनावश्यक यात्रा से बचने की अपील की है। मौसम विभाग के अनुसार रविवार को देहरादून, पिथौरागढ़, चमोली, चंपावत, रुद्रप्रयाग और बागेश्वर में भारी से बहुत भारी बारिश हो सकती है। इन जिलों के लिए येलो अलर्ट जारी किया गया है।

इन जिलों के अलावा प्रदेश के अन्य हिस्सों में भी मौसम बिगड़ा रह सकता है। कई स्थानों पर तेज बारिश के साथ गरज–चमक और आकाशीय बिजली की संभावना है। खासकर पर्वतीय क्षेत्रों में बारिश के दौरान सड़क पर मलबा आने और भूस्खलन की घटनाएं परेशानी बढ़ा सकती हैं। 10 अगस्त को बारिश का असर और व्यापक हो सकता है। मौसम विभाग ने देहरादून, नैनीताल, बागेश्वर और चंपावत के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इन जिलों में जोरदार बारिश की संभावना के चलते सड़क यातायात, स्थानीय जनजीवन और पर्यटन गतिविधियां प्रभावित हो सकती हैं। संवेदनशील पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन का खतरा भी बढ़ सकता है। मैदानी क्षेत्रों में भी तेज बारिश के साथ गरज–चमक और आकाशीय बिजली लोगों के लिए खतरा बन सकती है।

बारिश का दौर 11 अगस्त को भी जारी रहने की संभावना है। इस दिन उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, टिहरी, पौड़ी, चमोली, पिथौरागढ़ और ऊधमसिंह नगर के कुछ हिस्सों में गरज–चमक के साथ भारी बारिश का पूर्वानुमान है। यानी अगले तीन दिन प्रदेश के किसी न किसी हिस्से में मौसम का मिजाज बिगड़ा रहेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में लगातार बारिश के बीच सबसे बड़ा खतरा सड़क मार्गों पर बना हुआ है। भूस्खलन और चट्टान गिरने से राष्ट्रीय राजमार्ग और ग्रामीण संपर्क मार्ग बाधित हो सकते हैं। सड़क पर मलबा आने से यातायात रोकना पड़ सकता है। चारधाम और अन्य पर्वतीय क्षेत्रों की यात्रा पर निकलने वाले लोगों के लिए मौसम विभाग की चेतावनी बेहद महत्वपूर्ण है। खराब मौसम में यात्रा करने से रास्ते में फंसने का खतरा बढ़ सकता है।

मौसम विभाग ने लोगों को नदी–नालों और अन्य जलस्रोतों से दूर रहने की सलाह दी है। पहाड़ों में तेज बारिश के दौरान जलस्तर अचानक बढ़ सकता है। नदी किनारे पर्यटन या फोटो खींचने के लिए जाना जोखिम भरा हो सकता है। प्रशासन को भी संवेदनशील इलाकों में निगरानी बढ़ाने और किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए राहत एवं बचाव तंत्र को तैयार रखने की जरूरत है। बारिश के साथ कई स्थानों पर गरज–चमक और आकाशीय बिजली की संभावना भी जताई गई है। खुले स्थानों, पेड़ों के नीचे और बिजली के खंभों के आसपास खड़े होने से बचने की सलाह दी है।

हर घर तिरंगा यात्रा

सीएम ने हर घर तिरंगा यात्रा कार्यक्रम में किया प्रतिभाग

- मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से स्वतंत्रता दिवस पर अपने घरों में तिरंगा फहराने का किया आह्वान

संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को गांधी पार्क, देहरादून में आयोजित हर घर तिरंगा यात्रा कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से स्वतंत्रता दिवस पर अपने–अपने घरों में तिरंगा फहराने और राष्ट्रभक्ति की ज्वाला को सदैव प्रज्वलित रखने का आवाह्न किया।

मुख्यमंत्री ने घंटाघर स्थित उत्तराखण्ड आन्दोलन के महान नायक स्व. श्री इन्द्रमणी बडोनी एवं भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री, गांधी पार्क से घंटाघर तक हजारों लोगों के साथ तिरंगा यात्रा में भी शामिल हुए।

मुख्यमंत्री ने कहा तिरंगा यात्रा, राष्ट्र गौरव का उत्सव है। तिरंगा, करोड़ों भारतवासियों के स्वाभिमान का प्रतीक है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं वीर जवानों ने तिरंगे पर कभी कोई आंच नहीं आने दी। हमारा संकल्प है कि भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता की रक्षा के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहेंगे।उन्होंने कहा राष्ट्रभक्ति की भावना देवभूमि के कण–कण में बसी है। कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत, महाशक्ति के रूप में आगे बढ़ रहा है। भारत की अर्थव्यवस्था तेज गति से आगे बढ़ रही है। मेक इन इंडिया, डिजिटल क्रांति, स्वदेशी तकनीक से भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है।आज हम दुनिया को अनेकों क्षेत्र में नई दिशा दिखा रहे हैं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारतीय सेना का मनोबल बढ़ा है। सर्जिकल स्ट्राइक, ऑपरेशन सिंदूर से भारत ने पूरी दुनिया को अपनी ताकत दिखाई। देश, रक्षा क्षेत्र में निर्यातक बन रहा है। उन्होंने कहा हमारा राज्य देवभूमि के साथ वीरभूमि भी है। उत्तराखंड की मिट्टी ने देश को अनगिनत वीर सैनिक दिए हैं। हर दूसरे परिवार का बेटा सीमा पर रक्षा के लिए तैनात रहता है। राज्य सरकार अपने वीर जवानों, पूर्व सैनिकों और शहीद परिवारों के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

इस अवसर पर राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट, नरेश बंसल, कैबिनेट मंत्री श्री गणेश जोशी, सौरभ बहुगुणा, खजान दास, विधायक उमेश शर्मा काऊ, श्री विनोद चमोली, सविता कपूर, मेयर सौरभ थपलियाल, महानगर अध्यक्ष सिद्धार्थ अग्रवाल, महामंत्री कुंदन परिहार, दीप्ति रावत आदि मौजूद रहे।

आस्था और रफ्तार आमने–सामने, पुलिस की अग्निपरीक्षा

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। सावन आते ही हरिद्वार की सड़कों का रंग बदल जाता है। गंगा घाटों पर आस्था उमड़ती है और कांवड़ियों के जत्थे शहर से गुजरते हुए अपने गंतव्य की ओर बढ़ते हैं। लेकिन डाक कांवड़ के दौर में यह भीड़ सिर्फ बड़ी नहीं होती, उसकी रफ्तार भी चुनौती बन जाती है। तेज दौड़ते वाहन, सड़कों पर उमड़ता जनसैलाब और हर तरफ गूंजते जयकारे के बीच पुलिस के सामने एक साथ कई मोर्चे खुल जाते हैं। यही वह समय है जब पुलिस की असली अग्नि परीक्षा शुरू होती है। डाक कांवड़ का स्वरूप पारंपरिक कांवड़ यात्रा से अलग है। यहां समय की अहमियत बढ़ जाती है। कांवड़िए तेजी से अपने गंतव्य की ओर बढ़ते हैं और सड़क पर वाहनों की आवाजाही भी प्रभावित होती है। ऐसे में यातायात व्यवस्था, श्रद्धालुओं की सुरक्षा, स्थानीय लोगों की आवाजाही और आपातकालीन सेवाओं को सुचारु रखना पुलिस के लिए बड़ी चुनौती बन जाता है। एक छोटी–सी चूक बड़ी समस्या का कारण बन सकती है। डाक कांवड़ के दौरान पुलिस को सबसे ज्यादा मशक्कत यातायात व्यवस्था को लेकर करनी पड़ती है। एक ओर कांवड़ियों के लिए निर्धारित मार्गों पर भारी भीड़ रहती है, दूसरी ओर स्थानीय और बाहरी वाहनों की आवाजाही भी बनी रहती है। कई स्थानों पर सड़क का एक हिस्सा पूरी तरह कांवड़ियों के लिए सुरक्षित करना पड़ता है। रूट डायवर्जन लागू किए जाते हैं। भारी वाहनों को रोकना पड़ता है। शहर के भीतर यातायात का दबाव बढ़ जाता है। पुलिस के सामने सवाल सिर्फ रास्ता खाली कराने का नहीं होता। सवाल यह होता है कि किसी भी परिस्थिति में श्रद्धालुओं की सुरक्षा से समझौता न हो और आम नागरिक को भी परेशानी कम से कम हो। हरिद्वार से लेकर रुड़की और आगे उत्तर प्रदेश की सीमा तक पुलिस की तैनाती बढ़ जाती है। प्रमुख चौराहों, हाईवे, घाटों और संवेदनशील स्थानों पर अतिरिक्त बल लगाया जाता है। पुलिसकर्मी घंटों सड़क पर खड़े रहते हैं।

शेष पेज सात पर

दून वैली मेल

संपादकीय

खुद से प्रतिस्पर्धा

सवाल पूछिए, लेकिन सवाल के बाद समाधान भी खोजिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की युवाओं से यह अपील सुनने में जितनी सरल है, उसके भीतर उतनी ही बड़ी चुनौती छिपी है। आज का युवा सिर्फ नौकरी मांगने वाला युवा नहीं होना चाहिए, उसे सवाल पूछने वाला, व्यवस्था को आईना दिखाने वाला और समाधान तलाशने वाला नागरिक भी बनना होगा। लेकिन इसके साथ एक सवाल यह भी है कि क्या देश की व्यवस्था युवाओं के सवाल सुनने और उनके समाधान के लिए उतनी ही तैयार है? युवाओं को यह कहना आसान है कि दूसरों से प्रतिस्पर्धा मत करो, खुद से प्रतिस्पर्धा करो। अपनी पिछली उपलब्धि से आगे निकलने की कोशिश करो। यह विचार निश्चित रूप से प्रेरक है। प्रतिस्पर्धा जब दूसरों को पछाड़ने के बजाय खुद को बेहतर बनाने का माध्यम बनती है, तब उसका अर्थ बदल जाता है। लेकिन युवा जीवन केवल प्रेरक वाक्यों से नहीं चलता। उसके सामने बेरोजगारी, परीक्षा व्यवस्था, पेपर लीक, महंगी शिक्षा, कौशल और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी तथा अवसरों की असमानता जैसे वास्तविक सवाल भी खड़े हैं। युवा से सवाल पूछने की उम्मीद की जा रही है तो उसे सवाल पूछने का लोकतांत्रिक अधिकार भी उतनी ही मजबूती से मिलना चाहिए और अगर उससे समाधान खोजने की अपेक्षा है तो सरकार, संस्थानों और समाज को भी समाधान की प्रक्रिया में युवाओं को भागीदार बनाना होगा। क्योंकि सवाल केवल यह नहीं है कि युवा क्या कर रहा है। सवाल यह भी है कि व्यवस्था युवा के लिए क्या कर रही है? आज का युवा सोशल मीडिया के दौर में जी रहा है। उसके हाथ में सूचना है, तकनीक है, दुनिया से जुड़ने की क्षमता है। लेकिन इसी युवा के सामने यह विरोधाभास भी है कि डिग्रियां बढ़ रही हैं और रोजगार की चिंता भी। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सालों निकल जाते हैं। परीक्षा होती है तो कभी प्रश्नपत्र को लेकर विवाद, कभी परिणाम को लेकर सवाल और कभी पूरी प्रक्रिया की पारदर्शिता पर संदेह। ऐसे माहौल में प्रधानमंत्री का युवाओं से कहना कि सवाल पूछने के साथ समाधान भी खोजें, निश्चित रूप से सकारात्मक संदेश है। मगर लोकतंत्र में समाधान खोजने की जिम्मेदारी केवल नागरिक की नहीं होती। शासन की भी होती है। युवा अगर पूछे कि परीक्षा में पारदर्शिता कैसे आएगी, तो जवाब सिर्फ धैर्य रखने का नहीं, ठोस व्यवस्था का होना चाहिए। युवा अगर पूछे कि रोजगार कहां है, तो उसके सामने केवल स्टार्टअप का सपना नहीं, रोजगार के वास्तविक आंकड़े और अवसर भी होने चाहिए। युवा अगर पूछे कि पहाड़ से पलायन क्यों नहीं रुक रहा, तो उससे यह नहीं कहा जा सकता कि वह खुद अपना भविष्य बनाए। सवाल यह है कि उसके गांव में शिक्षा, स्वास्थ्य, इंटरनेट, बाजार और रोजगार की व्यवस्था कौन बनाएगा? यही वह जगह है जहां खुद से प्रतिस्पर्धा का विचार एक बड़े सामाजिक दर्शन में बदल सकता है। खुद से प्रतिस्पर्धा का मतलब केवल परीक्षा में ज्यादा अंक लाना नहीं है। इसका मतलब है आज का भारत कल के भारत से बेहतर हो। आज का गांव कल के गांव से बेहतर हो। आज का स्कूल कल के स्कूल से बेहतर हो। आज की सरकारी सेवा कल से ज्यादा पारदर्शी हो। आज का युवा कल के युवा से ज्यादा आत्मनिर्भर हो। अगर देश इस अर्थ में खुद से प्रतिस्पर्धा करने लगे तो विकास का पैमाना भी बदल जाएगा। फिर सवाल यह नहीं होगा कि हमने पड़ोसी देश से ज्यादा सड़कें बनाईं या किसी दूसरे देश से ज्यादा स्टार्टअप बनाए। सवाल होगा क्या हमारे गांव का बच्चा बेहतर शिक्षा पा रहा है? क्या युवाओं को अपनी योग्यता के मुताबिक अवसर मिल रहा है? क्या परीक्षा प्रणाली पर भरोसा बढ़ा है? क्या सरकारी संस्थानों में आम नागरिक की आवाज सुनी जा रही है? असल प्रतिस्पर्धा यहीं है। प्रधानमंत्री की अपील का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा शायद श्सवालश् है। लोकतंत्र सवालों से कमजोर नहीं होता, सवालों के दब जाने से कमजोर होता है। सवाल पूछने वाला युवा परेशानी नहीं, लोकतंत्र की ऊर्जा है। वह पूछता है तो व्यवस्था को जवाब देना पड़ता है। वह जवाब मांगता है तो नीतियों की समीक्षा होती है। वह समाधान सुझाता है तो शासन को जमीन की वास्तविकता समझ में आती है। लेकिन सवाल पूछने और समाधान खोजने के बीच एक और शब्द होना चाहिए संवाद। सरकार और युवा के बीच संवाद होगा तो शिकायत नीति में बदल सकती है। विद्यार्थी की परेशानी परीक्षा सुधार का कारण बन सकती है। पहाड़ के युवा की चिंता पलायन नीति को जमीन दे सकती है। स्टार्टअप करने वाले युवा की समस्या नियमों में सुधार ला सकती है। इसलिए युवाओं से सिर्फ यह कहना पर्याप्त नहीं कि सवाल पूछो और समाधान खोजो। उन्हें यह भरोसा भी देना होगा कि उनके सवाल सुने जाएंगे और उनके समाधान पर विचार होगा। भारत युवा देश है। यह वाक्य वर्षों से दोहराया जा रहा है। लेकिन युवा आबादी अपने आप जनसांख्यिकीय लाभांश नहीं बन जाती। उसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल, रोजगार, अवसर, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और भरोसेमंद संस्थानों की जरूरत होती है। वरना युवा शक्ति आंकड़ा बनकर रह जाएगी। आज जरूरत इस बात की है कि युवा दूसरों की सफलता से अपनी असफलता न मापे। सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली चमक से अपने जीवन का मूल्यांकन न करे। वह अपनी पिछली उपलब्धि से आगे बढ़ने का लक्ष्य बनाए। लेकिन साथ ही उसे यह भी समझना होगा कि व्यक्तिगत सफलता और सामाजिक जिम्मेदारी एक–दूसरे की विरोधी नहीं हैं। प्रधानमंत्री की युवाओं से अपील का सबसे बड़ा अर्थ तभी निकलेगा, जब इसे केवल प्रेरक संदेश नहीं बल्कि शासन और समाज के बीच नई साझेदारी की शुरुआत बनाया जाए। क्योंकि देश तब आगे नहीं बढ़ता जब उसके युवा केवल सपने देखते हैं। देश तब आगे बढ़ता है जब युवा सपने देखते हैं, सवाल पूछते हैं, जवाब मांगते हैं और समाधान बनाने में भागीदारी करते हैं और शायद यही समय है जब भारत को दूसरों से आगे निकलने की होड़ से थोड़ा बाहर निकलकर खुद से एक बड़ा सवाल पूछना चाहिए क्या आज का भारत कल के भारत से बेहतर है? अगर जवाब हां है तो अगला सवाल होना चाहिए कितना बेहतर? और अगर जवाब नहीं है, तो फिर प्रतिस्पर्धा किसी दूसरे देश से नहीं, खुद से करनी होगी।

भाजपा की 'सर्जिकल स्ट्राइक'

भाजपा की बैठक

- धामी ने कसा बूथ का पेच, सुस्त विपक्ष के लिए खतरे की घंटी
- भाजपा की बैठक में सीएम ने किया चुनावी शंखनाद
- 2027 के लिए संगठन को मैदान में उतरने का सीएम धामी ने दिया संदेश

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव की उलटी गिनती भले अभी शुरू न हुई हो, लेकिन सियासी मैदान में तैयारियां तेज हो गई हैं। भाजपा की अहम बैठक में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की हुंकार ने साफ कर दिया कि पार्टी अब चुनावी मोड में प्रवेश कर चुकी है। सरकार की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने से लेकर संगठन को बूथ स्तर पर सक्रिय करने तक की रणनीति पर जोर के बीच धामी का संदेश साफ था अब रुकना नहीं है, चुनावी मैदान में उतरना है।

धामी की इस हुंकार को सिर्फ कार्यकर्ताओं में जोश भरने वाला भाषण मानना राजनीतिक भूल होगी। इसके पीछे 2027 के विधानसभा चुनाव का पूरा खाका दिखाई देता है। भाजपा सत्ता में है और लगातार तीसरी बार सरकार बनाने का लक्ष्य उसके सामने है। दूसरी ओर कांग्रेस सत्ता में वापसी के लिए जमीन तलाश रही है। ऐसे में भाजपा की यह बैठक विपक्ष के लिए भी संदेश है कि सत्तारूढ़ दल चुनावी लड़ाई को लेकर गंभीर है और संगठन को अभी से सक्रिय करने की तैयारी में जुट गया है।

मुख्यमंत्री धामी की राजनीति पिछले कुछ वर्षों में भाजपा के लिए उत्तराखंड में एक महत्वपूर्ण चुनावी चेहरा बनकर उभरी है। 2022 में पार्टी के सत्ता में लौटने के बाद धामी के नेतृत्व में सरकार ने कई ऐसे फैसलों को राजनीतिक नैरेटिव का हिस्सा बनाया, जिन्हें भाजपा अब जनता के बीच लेकर जाने की तैयारी में है। अब चुनौती यह है कि सरकारी फैसले फाइलों से निकलकर मतदाता तक पहुंचें। यही वजह है कि भाजपा की रणनीति में संगठन को सबसे आगे रखा जा रहा है। धामी का संदेश कार्यकर्ताओं के लिए जितना स्पष्ट था, उतना ही विपक्ष के लिए भी भाजपा चुनाव का इंतजार नहीं करेगी, बल्कि चुनाव से पहले ही चुनावी जमीन तैयार करेगी।

कांग्रेस लंबे समय से सरकार के खिलाफ बेरोजगारी, महंगाई, पलायन, सड़क, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मुद्दे उठा रही है। विपक्ष की कोशिश है कि इन मुद्दों को लेकर सरकार के खिलाफ माहौल बनाया जाए। भाजपा अब विपक्ष के इसी नैरेटिव का जवाब अपने विकास और जनकल्याणकारी फैसलों के जरिए देने की तैयारी में है। लेकिन भाजपा के सामने चुनौती भी कम नहीं है। सत्ता में लंबे समय तक रहने के बाद स्थानीय स्तर पर नाराजगी पैदा होना स्वाभाविक राजनीतिक जोखिम है। कई सीटों पर विधायकों के कामकाज को लेकर कार्यकर्ताओं और जनता की राय पार्टी के लिए महत्वपूर्ण होगी। धामी की हुंकार के बाद अब संगठन को केवल विपक्ष से नहीं, अपने भीतर की चुनौतियों से भी मुकाबला करना होगा।

भाजपा का चुनावी गणित हमेशा बूथ से शुरू होता है। बड़े नेताओं की रैलियां माहौल बना सकती हैं, लेकिन वोट बूथ पर पड़ता है। इसीलिए पार्टी कमजोर बूथों की पहचान, कार्यकर्ताओं की सक्रियता और मतदाताओं से लगातार संपर्क पर जोर दे रही है। भाजपा का लक्ष्य साफ है चुनाव की घोषणा से पहले संगठन इतना मजबूत हो जाए कि आखिरी समय में उसे हड़बड़ी में व्यवस्था खड़ी न करनी पड़े। यह रणनीति कांग्रेस के लिए चुनौती है। कांग्रेस अगर चुनाव से कुछ महीने पहले संगठन को सक्रिय करने की कोशिश करती है और भाजपा पहले से बूथ पर पहुंच चुकी होती है, तो चुनावी मुकाबले का अंतर यहीं से बन सकता है।

भाजपा की चुनावी रणनीति चाहे जितनी मजबूत हो, अंतिम फैसला जनता को करना है। उत्तराखंड के गांवों में आज भी रोजगार और पलायन बड़ा सवाल है। पहाड़ में स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति, शिक्षा, सड़क और पेयजल जैसे मुद्दे चुनावी बहस का हिस्सा बने रहेंगे। युवा रोजगार चाहता है। महिला सुरक्षित और सुविधाजनक जीवन चाहती है। किसान अपनी उपज की कीमत चाहता है। गांव बुनियादी सुविधाएं चाहता है और पहाड़ चाहता है कि विकास केवल घोषणाओं में नहीं, जमीन पर भी दिखाई दे। इसलिए भाजपा के सामने चुनौती केवल यह बताने की नहीं होगी कि उसने क्या किया। चुनौती यह साबित करने की भी होगी कि सरकार के काम का असर आम आदमी की जिंदगी पर कितना पड़ा। 2027 का चुनाव सिर्फ भाजपा की परीक्षा नहीं होगा। यह मुख्यमंत्री धामी के राजनीतिक नेतृत्व की भी बड़ी परीक्षा होगी। अगर भाजपा लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटती है तो धामी की राजनीतिक स्थिति और मजबूत होगी। लेकिन अगर पार्टी को अपेक्षित सफलता नहीं मिली तो स्वाभाविक रूप से नेतृत्व और रणनीति पर सवाल उठेंगे। इसलिए बैठक में धामी की हुंकार के पीछे राजनीतिक दांव भी बड़ा है। यह केवल कार्यकर्ताओं से जोश मांगने का वक्त नहीं है। यह अपने नेतृत्व, संगठन और सरकार के रिपोर्ट कार्ड को जनता की अदालत में ले जाने की तैयारी है।

धामी की हुंकार को कांग्रेस शायद इसी वजह से हल्के में नहीं लेना चाहेगी। विपक्ष के सामने अब सवाल है कि वह भाजपा के मजबूत संगठन का मुकाबला किस रणनीति से करेगा? क्या कांग्रेस बूथ स्तर पर भाजपा की बराबरी कर पाएगी? क्या वह स्थानीय असंतोष को वोट में बदल पाएगी? क्या वह सरकार के खिलाफ मुद्दों को एक बड़े राजनीतिक नैरेटिव में बदल सकेगी? या फिर भाजपा सरकार की योजनाओं और संगठन की ताकत के सामने विपक्ष का हमला बिखर जाएगा? इन सवालों के जवाब आने वाले महीनों में मिलेंगे।

भाजपा की बैठक से एक बात साफ है उत्तराखंड की राजनीति अब धीरे–धीरे चुनावी रंग में रंगने लगी है। मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं को संदेश दे दिया है। संगठन ने तैयारी शुरू कर दी है। अब नजर इस बात पर होगी कि यह हुंकार कितनी जल्दी गांव, शहर, बूथ और मतदाता तक पहुंचती है। क्योंकि चुनाव भाषणों से शुरू जरूर होते हैं, लेकिन जीत मतदाता के दरवाजे पर तय होती है। धामी ने हुंकार भर दी है। अब भाजपा के सामने चुनौती है कि इस हुंकार को हर बूथ की आवाज बनाया जाए और विपक्ष के सामने चुनौती है कि वह इस आवाज का जवाब कैसे देता है। 2027 चुनाव अभी दूर दिखाई दे सकता है, लेकिन उसकी सियासी बिसात बिछनी शुरू हो चुकी है।

कुंभ मेला–2027 के कार्यों के लिए 80.96 करोड़ स्वीकृत

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा जनपद उधमसिंहनगर के विधानसभा क्षेत्र नानकमत्ता के अन्तर्गत नगर पंचायत, नानकमत्ता में पानी निकासी एवं सौन्दर्यीकरण किये जाने के लिए 96 लाख की धनराशि स्वीकृत किये जाने के साथ ही शहरी विकास विभाग के अन्तर्गत कुम्भ मेला–2027 के कार्यों के लिए 175.00 करोड़ के सापेक्ष प्रथम चरण में 80.00 करोड़ की धनराशि स्वीकृत किये का अनुमोदन प्रदान किया गया है।

इन एक्सरसाइज से आपकी अंगुलियों व कलाई का दर्द मिनटों में छूमंतर हो जाएगा

लैपटॉप या सिस्टम पर लगातार बैठकर काम करना कोई मजाक की बात नहीं है। जो लोग सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक लैपटॉप के आगे बैठकर काम करते हैं या टाइपिंग करते हैं उन्हें अक्सर अंगुलियों, कलाई और कंधों में दर्द की शिकायत रहती है। इससे हथेलियों, कलाई और अंगुलियों में अकड़न आ जाती है और अंगूठे जाम व सुन्न भी हो जाते हैं। इन समस्याओं पर अगर समय रहते काम न किया जाए तो एक वक्त के बाद ये गंभीर रूप ले ले सकती है। इसलिए आज इस लेख में हम आपको कुछ ऐसी आसान एक्सरसाइज बता रहे हैं जिन्हें आप बैठे बैठे कर सकते हैं और आपकी अंगुलियों व कलाई का दर्द मिनटों में छूमंतर हो जाएगा।

कलाई को घुमाना

इसके लिए अपना हाथ पकड़ें और अंगुलियों को छत की ओर ले जाते हुए सीधे खोलें। जब आपको थोड़ा सा खिंचाव महसूस हो तो छोड़ दें। अंगुलियों को नीचे की ओर करें और प्रत्येक हाथ के लिए इस प्रक्रिया को 10 बार दोहराएं।

हैंड पम्पिंग

यह अंगुलियों और कलाई के दर्द से राहत पाने का वाकई एक बहुत अच्छा तरीका है। इसके लिए आपको बस अपनी बाहों को पकड़ें और हाथों को बाहर की ओर खींचें। धीमी गति में मुट्ठी बनाएं और इसे प्रत्येक हाथ से 20 बार करें। इसे आप हर घंटे में एक बार कर सकते हैं।

थंब स्ट्रेच

इसके लिए छत के सामने हथेली के साथ अपना हाथ पकड़ें और अपनी हथेली पर अंगूठे को तब तक फैलाएं जब तक कि आप दबाव को महसूस न कर सकें। इसे 10 सेकंड के लिए पकड़कर रखें और फिर छोड़ दें। इस प्रक्रिया को दोनों अंगूठों से कम से कम 10 बार ऐसा करें।

हैंड स्ट्रेचिंग

छत के सामने अपने हाथों के पीछे अपने हाथों को अपने सामने फैलाएं। अब मुट्ठी बनाएं और फिर इसे अपनी अंगुलियों से नीचे की ओर खोलें और पोरों से नीचे की ओर खोलें। 2 सेकंड के लिए इसी स्थिति में रहें। अब, अपने हाथों को पूरी तरह से खोलें और जब तक आपकी अंगुलियां खिंचाव महसूस न करें, तब तक उन्हें फैलाएं रखें और 2 सेकंड तक इसी पोज में रहें। ऐसा रोजाना 5 बार करें।

कलाई की स्ट्रेचिंग

छत के सामने अपनी हथेली के साथ अपने दाहिने हाथ को सामने लाएं। दूसरे हाथ से अपनी चार अंगुलियां पकड़ें और धीरे से उन्हें नीचे की ओर खींचें। कुछ सेकंड के लिए इसे दबाए रखें और फिर छोड़ दें। अब दूसरी तरह फिर से इसे करें। आप इसे रोजाना 4 से 5 बार कर सकते हैं।

थंब टच

अपनी हथेलियों को ऊपर की ओर करते हुए अपने हाथों को बाहर की ओर रखें। अपना दाहिना हाथ लें और अंगूठे को हर अंगुली से टच करें। अब बाएं हाथ से भी ऐसा ही दोहराएं। ऐसा प्रत्येक हाथ से पाँच बार करें। इससे आपके अंगूठे और अंगुलियों का दर्द तुरंत दूर होगा।

टूथपेस्ट दिलाएगा अनचाहे बालों से छुटकारा, जानें कैसे...

अक्सर खूबसूरत दिखने के लड़कियां ब्यूटी पार्लर जाने से लेकर महंगे प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करती हैं लेकिन अनचाहे बालों की वजह से आपकी खूबसूरती में कमी आ सकती हैं।

शरीर से बालों को हटाने के कई विकल्प हैं लेकिन हमेशा उन विकल्पों के बारे में लोग सोचते हैं जो ज्यादा दिन तक व आसानी से बाल को हटा सकते हों। सामान्यतया वैक्सिंग या थ्रेडिंग से बालों को हटाया जाता है लेकिन दोनों में दर्द होता है। ऐसे में आप चाहे तो पार्लर की लम्बी कतार में खड़ी हो सकती हैं या हमारे द्वारा बताए जा रहे उपाय से मोनातों में अनचाहे बालों से छुटकारा पा सकती हैं। तो आइये जानते हैं इस नुस्खें के बारे में।

कई बार आपने सुना होगा कि लोग बताते हैं कि टूथपेस्ट की मदद से भी बालों को हटाया जा सकता है। क्या सच में टूथपेस्ट से बालों को हटाया जा सकता है ? अगर हटाया जा सकता है तो उसका तरीका क्या है ? कुछ इस तरह के सवाल आप भी करते होगे। हम यहां उसी पर बात करेंगे।

बनाने का तरीका

– सबसे पहले टूथपेस्ट और बेकिंग सोडा को एक साथ एक बाउल में अच्छे से मिला लें। ऐसा करते समय इस पेस्ट में थोड़ा सा गुनगुना पानी भी डाल दें।

–अब इस मिश्रण को तब तक अच्छे से मिलाएं जब तक यह ढंग से मिक्स न हो जाए।

इस्तेमाल करने का तरीका

सबसे पहले तो आप इसे गर्दन के आस-पास या कानों के पीछे लगाकर टेस्ट करें कि आपको यह नुकसान तो नहीं करने वाली है। उसके बाद इस पेस्ट को अपने उस जगह लगाएं जहां से आप अनचाहे बाल हटाना चाहते हैं।

– करीब 15 मिनट बाद इस पेस्ट के सूखने पर अपने हाथ-पैरों को धो लें।

– ऐसा करने से आपके उस हिस्से पर बाल आना बंद हो जाएंगे। इतना ही नहीं वहां कि त्वचा कोमल और खूबसूरत भी दिखने लगेगी।

'कुमाऊं की सियासी नब्ज'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव 2027 की आहट के साथ राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। कांग्रेस अब कुमाऊं की धरती से चुनावी अभियान को धार देने की तैयारी में है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के हल्द्वानी दौरे को इसी रणनीति की कड़ी के रूप में देखा जा रहा है। हल्द्वानी को कांग्रेस ने इसके लिए चुना है तो इसके पीछे केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि कुमाऊं की राजनीतिक नब्ज को साधने की कोशिश भी मानी जा रही है। कुमाऊं में कांग्रेस की पारंपरिक पकड़, स्थानीय मुद्दों और संगठन की मौजूदा स्थिति को देखते हुए पार्टी हाईकमान यहां से कार्यकर्ताओं को बड़ा राजनीतिक संदेश देना चाहता है। कांग्रेस की कोशिश है कि हल्द्वानी से ऐसा माहौल तैयार किया जाए, जिसकी राजनीतिक गूंज अल्मोड़ा से लेकर पिथौरागढ़, नैनीताल, बागेश्वर, चंपावत और ऊधम सिंह नगर तक सुनाई दे।

◆कांग्रेस की चुनावी रणनीति में कुमाऊं पर ख़ास फोकस
◆विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस का है शक्ति प्रदर्शन
◆संगठन और कार्यकर्ताओं में जोश, भाजपा को देंगे संदेश

कुमाऊं की राजनीति में हल्द्वानी का अपना अलग महत्व है। इसे कुमाऊं का प्रमुख राजनीतिक और आर्थिक केंद्र माना जाता है। मैदानी और पहाड़ी क्षेत्रों के बीच संपर्क का बड़ा केंद्र होने के कारण हल्द्वानी का राजनीतिक संदेश पूरे कुमाऊं में तेजी से पहुंचता है। कांग्रेस इसी राजनीतिक और भौगोलिक महत्व का लाभ उठाना चाहती है। पार्टी की रणनीति में हल्द्वानी सिर्फ कार्यक्रम स्थल नहीं, बल्कि कुमाऊं में चुनावी अभियान के लान्चिंग पैड की भूमिका निभा सकता है। लंबे समय से कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने की रही है। सत्ता में वापसी के लिए पार्टी को केवल बड़े नेताओं के भाषणों पर निर्भर रहने के बजाय जमीनी संगठन को सक्रिय करना होगा। मल्लिकार्जुन खरगे का दौरा इसी लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

कार्यकर्ताओं के साथ संवाद, संगठन को चुनाव के लिए तैयार करने का संदेश और भाजपा सरकार के खिलाफ मुद्दों को जनता के बीच ले जाने की रणनीति पर पार्टी नेतृत्व जोर दे सकता है। कांग्रेस चाहती है कि कार्यकर्ता चुनावी मोड में अभी से उतरें और विधानसभा स्तर पर मतदाताओं के साथ संपर्क अभियान तेज करें। कुमाऊं की राजनीति में स्थानीय मुद्दों का प्रभाव हमेशा महत्वपूर्ण रहा है। कांग्रेस बेरोजगारी, पलायन, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, महंगाई, युवाओं के रोजगार और पहाड़ी क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं को लेकर सरकार को घेरने की तैयारी में है। इसके अलावा जमीन और स्थानीय पहचान से जुड़े मुद्दे भी चुनावी बहस का हिस्सा बन सकते हैं। कांग्रेस का प्रयास रहेगा कि राष्ट्रीय राजनीति के बजाय उत्तराखंड के स्थानीय सवालों को चुनाव का केंद्र बनाया जाए।

हल्द्वानी से राष्ट्रीय अध्यक्ष का कार्यक्रम कांग्रेस की ओर से भाजपा को सीधा राजनीतिक संदेश भी माना जा रहा है। भाजपा लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटने की रणनीति पर काम कर रही है। संगठन को बूथ स्तर पर मजबूत करने और हारी हुई सीटों पर विशेष फोकस की उसकी तैयारी सामने आ चुकी है। ऐसे में कांग्रेस भी यह दिखाना चाहती है कि वह चुनाव से पहले संगठन को सक्रिय कर रही है और मुकाबले के लिए तैयार है। खरगे की मौजूदगी से पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने के साथ कांग्रेस नेतृत्व यह संदेश देने की कोशिश करेगा कि उत्तराखंड का चुनाव कांग्रेस के लिए सिर्फ राज्य इकाई का चुनाव नहीं, बल्कि केंद्रीय नेतृत्व की प्राथमिकता भी है।

उत्तराखंड की राजनीति में कुमाऊं क्षेत्र कांग्रेस के लिए लंबे समय तक महत्वपूर्ण आधार रहा है। हालांकि पिछले विधानसभा चुनावों में भाजपा ने यहां मजबूत प्रदर्शन किया। अब कांग्रेस के सामने चुनौती पुराने राजनीतिक आधार को दोबारा सक्रिय करने की है। इसके लिए पार्टी को सिर्फ बड़े नेताओं की सभाओं से आगे बढ़ना होगा। स्थानीय नेतृत्व, पूर्व प्रत्याशी, विधायक, जिला और ब्लॉक संगठन तथा बूथ कार्यकर्ताओं के बीच तालमेल मजबूत करना होगा। हल्द्वानी का कार्यक्रम इसी बड़े अभियान की शुरुआत बन सकता है।

उत्तराखंड में चुनावी राजनीति अक्सर गढ़वाल और कुमाऊं के क्षेत्रीय संतुलन के इर्द-गिर्द भी देखी जाती है। ऐसे में हल्द्वानी से कांग्रेस का बड़ा कार्यक्रम यह संकेत दे सकता है कि पार्टी कुमाऊं में अपनी राजनीतिक जमीन को मजबूत करने के लिए अलग रणनीति पर काम कर रही है। कांग्रेस के सामने लक्ष्य स्पष्ट हैकृकुमाऊं की अधिक से अधिक विधानसभा सीटों पर मुकाबले को मजबूत करना। इसके लिए पार्टी को स्थानीय असंतोष को राजनीतिक मुद्दे में बदलना होगा और संगठन को चुनावी मशीनरी में तब्दील करना होगा। मल्लिकार्जुन खरगे की हल्द्वानी यात्रा का महत्व सिर्फ उनके भाषण तक सीमित नहीं रहेगा। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि कार्यक्रम के बाद कांग्रेस संगठन कितनी तेजी से सक्रिय होता है। क्या बूथ स्तर पर नई जिम्मेदारियां तय होंगी? क्या स्थानीय नेताओं के बीच मतभेद कम होंगे?क्या युवाओं और महिला मतदाताओं के लिए अलग अभियान तैयार होगा?क्या कांग्रेस भाजपा सरकार के खिलाफ स्थानीय मुद्दों को लगातार जनता के बीच ले जाएगी? इन सवालों के जवाब ही तय करेंगे कि हल्द्वानी का यह कार्यक्रम महज एक राजनीतिक सभा था या 2027 के चुनावी अभियान का वास्तविक आगाज। फिलहाल कांग्रेस का संदेश साफ दिखाई दे रहा है. कुमाऊं की जमीन पर लौटना है, संगठन को जगाना है और भाजपा के सामने सीधी चुनौती पेश करनी है। हल्द्वानी से उठने वाली यह राजनीतिक आवाज आने वाले महीनों में कुमाऊं की चुनावी हवा किस दिशा में मोड़ती है, इस पर अब सबकी नजर रहेगी।

काश्तकारों ने खरीदे 1500 से अधिक फलदार पौध

चमोली(आरएनएस)। काश्तकारों की रुचि फलदार पौध लगाने में बढ़ रही है। इसके तहत काश्तकार उद्यान विभाग और महिला समूह से कुल 1500 से अधिक पौधे खरीद चुके हैं। पिछले कुछ वर्षों से जलवायु परिवर्तन और बंदर-लंगूरों के कारण फलोत्पादन में भारी गिरावट आई है। आदिबदरी सचल दल केंद्र के उद्यान पर्यवेक्षक अरविंद कुमार ने बताया कि केंद्र में आए 1050 पौधों में से 1000 से अधिक काश्तकार ले जा चुके हैं। काश्तकार अभी तक पौधे लेने पहुंच रहे हैं। कुछ काश्तकार सुरक्षा जालों का उपयोग भी कर रहे हैं जिससे उन्हें लाभ मिल रहा है। आदिबदरी महिला समूह से भी 500 कागजी नींबू, आम और लीची के पौधे ले जाए चुके हैं। समूह से जुड़ी शकुंतला बरमोला ने कहा कि बंदर-लंगूरों से बचाव होने पर फलोत्पादन आय का अच्छा स्रोत बन सकता है।

पेंशन और छात्रवृत्ति लाभार्थियों हेतु डीबीटी इनेबल करना आवश्यक

अल्मोड़ा (आरएनएस)। समाज कल्याण विभाग ने जनपद के पेंशनधारकों और छात्रवृत्ति लाभार्थियों से अपने बैंक खातों को शीघ्र डीबीटी (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) इनेबल कराने की अपील की है।

विभाग ने स्पष्ट किया है कि जिन खातों में डीबीटी सुविधा सक्रिय नहीं होगी, उनमें पेंशन और छात्रवृत्ति की धनराशि का भुगतान प्रभावित हो सकता है। जिला समाज कल्याण अधिकारी शैलेन्द्र पाण्डे ने बताया कि सरकार द्वारा वृद्धावस्था, दिव्यांग, विधवा पेंशन सहित सभी पेंशन योजनाओं और छात्रवृत्ति योजनाओं का भुगतान आधार आधारित डीबीटी प्रणाली के माध्यम से किया जा रहा है। जिन लाभार्थियों की धनराशि आधार सीडिंग या डीबीटी सक्रिय नहीं होने के कारण अवरुद्ध हो रही है, वे अपने संबंधित बैंक में जाकर खाते को अनिवार्य रूप से डीबीटी इनेबल कराएं।

उन्होंने बताया कि जिन लाभार्थियों के बैंक खाते अभी तक डीबीटी इनेबल नहीं हैं, उनकी सूची संबंधित विकासखंड कार्यालयों और जिला समाज कल्याण अधिकारी कार्यालय में चस्पा कर दी गई है। समाज कल्याण अधिकारी ने सभी पेंशनधारकों और छात्र-छात्राओं से डीबीटी इनेबल कराने के बाद इसकी सूचना संबंधित विकासखंड में तैनात सहायक समाज कल्याण अधिकारी अथवा जिला समाज कल्याण अधिकारी कार्यालय को उपलब्ध कराने की अपील की है, ताकि पेंशन और छात्रवृत्ति का भुगतान बिना किसी बाधा के किया जा सके।

कांस्य पदक जीतने वाली उन्नति शर्मा को मेयर ने किया सम्मानित

हमारे संवाददाता

देहरादून। कॉमनवेल्थ गेम्स ग्लासगो 2026 में महिला जूडो के 63 किलोग्राम भार वर्ग में कांस्य पदक जीतकर देश एवं उत्तराखंड का गौरव बढ़ाने वाली देहरादून की बेटी उन्नति शर्मा को देहरादून के महापौर सौरभ थपलियाल ने उनके गोरखपुर शाह नगर देहरादून स्थित आवास में पहुंचकर सम्मानित किया, मौके पर उनके परिजन एवं पार्षद देवेंद्र गैरोला ,आशीष यादव उपस्थित रहे।

इस अवसर पर महापौर सौरभ थपलियाल ने उन्नति शर्मा को उनकी ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं उन्होंने कहा कि उन्नति शर्मा की सफलता ने न केवल देहरादून, बल्कि पूरे उत्तराखंड और देश का गौरव बढ़ाया है। महापौर ने कहा कि उन्नति शर्मा की यह उपलब्धि प्रदेश की युवा बेटियों और खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है, उन्होंने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि उन्नति आने वाले समय में देश के लिए और भी बड़ी उपलब्धियां हासिल करें। उन्होने कहा कि देहरादून की बेटी उन्नति शर्मा ने अपनी मेहनत, लगन और प्रतिभा से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का मान बढ़ाया है। उनकी इस उपलब्धि पर पूरा देहरादून गौरवान्वित है।

कार्य समिति का सदस्य बनाने पर सहप्रभारी का जताया आभार

संवाददाता

देहरादून। प्रतापनगर विधायक विक्रम सिंह नेगी ने कार्य समिति का सदस्य व अनुशासन समिति का चेयरमैन बनाने पर सह प्रभारी सुरेन्द्र शर्मा का आभार व्यक्त किया।

आज यहां उत्तराखण्ड प्रदेश कांग्रेस के नव नियुक्त पदाधिकारियों ने सह प्रभारी सुरेंद्र शर्मा का आभार व्यक्त किया। प्रतापनगर विधायक विक्रम सिंह नेगी ने सह प्रभारी सुरेन्द्र शर्मा का आभार व्यक्त किया और उन्हे कार्य समिति के सदस्य एवं अनुशासन समिति के चैयरमैन मनोनीत होने पर शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सह प्रभारी सुरेंद्र शर्मा ने कहा कि हमारे सामने 2027 की चुनौती है जिसके लिए जी जान से जुट जाए। आज प्रदेश की जनता भाजपा के कुशासन से त्रस्त है और कांग्रेस की तरफ आशाभरी निगाह से टकटकी लगाये हुई हैं। प्रदेश में कांग्रेस के पक्ष में बेहतर माहौल है कांग्रेस की विचारधारा कांग्रेस सरकार के समय किये गये कार्यो नीतियों को एवं भाजपा सरकार की जन विरोध ी नीतियों बेरोजगारी, भ्रस्टाचार, महंगाई, महिला उत्पीड़न, बदहाल स्वास्थ्य व्यवस्थाओ सरकार की नाकामी को घर घर लेकर जाए। नव नियुक्त प्रदेश सचिव महेश जोशी ने शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आम जन से संवाद स्थापित कर जन हित में संघर्ष किया जायेगा और कांग्रेस की नीतियों को जन जन तक पहुंचाया जायेगा। नव नियुक्त प्रदेश सचिव त्रिलोक सजवान टीटू त्यागी ने विधायक का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर नव नियुक्त प्रदेश सचिव महेश जोशी, त्रिलोक सजवाण, मनोज खुल्वे, नितिन खुल्वे ने शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त किया।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविय में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

जिलास्तरीय प्रतियोगिता के लिए 37 बालक और 21 बालिकाएं चुनी गई

नई टिहरी(आरएनएस)। बौराड़ी स्टेडियम में आयोजित मुख्यमंत्री खिलाड़ी प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना की ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिता में 37 बालक और 21 बालिकाओं का जिलास्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयन किया गया हैाव्यायाम शिक्षक चक्रधर प्रसाद भद्री ने बताया कि 14 से 23 आयु वर्ग की बालक-बालिकाओं की ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिता में 14 से 17 बालक आयु वर्ग की बॉक्सिंग प्रतियोगिता में अंकुश नेगी और कृष्णा नेगी, कबड्डी में साजन, प्रिंस, एथलेटिक्स में नितिन और अभिषेक, हॉकी में आदर्श, वंश डबराल, जूडो में सुभाष और शुभम, वॉलीबाल में अंकित मेहर और शिवांश, बैडमिंटन में दिव्यांशु सकलानी, आदर्श उनियाल, टेबल टेनिस में दीपक, फुटबाल में ऑथन रावत, कराटे में सुमन बिष्ट का चयन किया गया है।

बालिका वर्ग की बैडमिंटन में जिया और दिव्यांशी, कराटे में सोनम चौहान व प्रतिष्ठा उनियाल, जूडो में शिवानी व पारुल, कबड्डी में अंशिका व अक्षरा, बॉक्सिंग में संस्कृति चौहान व मीनाक्षी, बास्केटबॉल में शाहिना, हॉकी में प्रिया, ताइक्वांडो में कसक, टेबल टेनिस में आकृति, वॉलीबाल में दिया चुनी गई। 17 से 19 बालक वर्ग की ताइक्वांडो में अनिल नेगी, टेबल टेनिस में आयुष पुंडीर, जूडो में सागर सिंह, बास्केटबाल में अर्पित सजवाण, कबड्डी में अभिनव डबराल, बैडमिंटन में सौरव, एथलेटिक्स में सुजल सिंह और आयुष पाल, बॉक्सिंग में प्रिंस नेगी और लकी का हुआ हैावॉलीबाल में संजीव और शौर्य सिंह इसी प्रकार बालिका वर्ग जूडो में सपना, कबड्डी में सुप्रिया, 19 से 21 बालक वर्ग एथलेटिक्स में अनीश, बैडमिंटन में अभिषेक रावत, बॉक्सिंग में आर्यन नेगी, ताइक्वांडो में कृष्ण पैन्यूली, टेबल टेनिस में आदित्य और बालिका वर्ग जुडो में सारिका व सोनम, टेबल टेनिस में सीमा। 21 वर्ष से 23 बालक वर्ग फुटबॉल में मयंक, टेबल टेनिस में संदीप, बास्केटबॉल में प्रखर को जिले के लिए चुना गया है।

31 अगस्त को होगी विकासखंड स्तरीय विज्ञान संगोष्ठी

रुद्रपुर(आरएनएस)। राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र नई दिल्ली के संयोजन एवं एससीईआरटी उत्तराखंड के निर्देशन में भारतीय ऊर्जा परिदृश्य 2047 संभावना एवं चुनौतियां विषय पर विकासखंड स्तरीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन 31 अगस्त को सेंट जेवियर सीनियर सेकेंडरी स्कूल में किया जाएगा। सेमिनार के समन्वयक निर्मल कुमार न्योलिया ने बताया कि प्रतियोगिता में विकासखंड खटीमा के सभी विद्यालयों के कक्षा 8 से 10 तक के विघार्थी प्रतिभाग करेंगे।

यूओयू में 'वन्दे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे होने पर कार्यक्रमों की श्रृंखला शुरु

हल्द्वानी (आरएनएस)। राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उत्तराखण्ड मुक्त विवि में विविध कार्यक्रमों की श्रृंखला का शुभारंभ किया गया। सामूहिक रूप से 'वन्दे मातरम्' के गायन के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। कुलपति नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि 'वन्दे मातरम्' केवल राष्ट्रीय गीत नहीं, बल्कि स्वतंत्रता चेतना, त्याग, आत्मगौरव और मातृभूमि के प्रति अटूट समर्पण का प्रतीक है। योग विभाग की ओर आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में 68 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विवि प्रशासन ने बताया कि 15 अगस्त तक चलने वाली विशेष श्रृंखला के तहत सामान्य ज्ञान, क्विज, गायन, मेहंदी, चित्रकला और निबंध प्रतियोगिताओं समेत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।यहां निदेशक अकादमिक पीडी पंत, प्रो. रेनू प्रकाश, भानु जोशी, दीपक कुमार, नीता, दीक्षा बिष्ट, गोपाल सिंह गौनिया, नमिता वर्मा, किशोर कुमार, शैलजा आदि रहे।

वैज्ञानिक सोच व नवाचार को बढ़ावा देती है इंस्पायर अवार्ड योजना

चमोली (आरएनएस)। इंस्पायर अवार्ड मानक योजना को लेकर ब्लॉक स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। राज्य समन्वयक डॉ. अवनीश उनियाल ने वर्चुअली जुड़ते हुए योजना के तहत शत प्रतिशत नामांकन का लक्ष्य निर्धारित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इंस्पायर अवार्ड योजना वैज्ञानिक सोच व नवाचार को बढ़ावा देती है।

ब्लॉक सभागार में खंड शिक्षा अधिकारी नेहा भट्ट की अध्यक्षता में आयोजित कार्यशाला में जिला समन्वयक गंभीर सिंह असवाल ने बताया कि केंद्र सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से इंस्पायर अवार्ड मानक योजना संचालित होती है।

इसका उद्देश्य कक्षा छह से 12वीं तक के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच और नवाचार को बढ़ावा देना है। जिन विद्यार्थियों के आइडिया को चयनित किया जाएगा उन्हें मॉडल बनाने के लिए डीबीटी के माध्यम से 10 हजार रुपये दिए जाएंगे। खंड शिक्षाधिकारी नेहा भट्ट ने सभी संकुल समन्वयकों को इंस्पायर अवार्ड योजना में शत प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। इस दौरान ब्लॉक समन्वयक संदीप नेगी, सह समन्वयक सुरेंद्र राणा, राजकीय जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष उपेंद्र सती, अशासकीय जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष सुरेंद्र सिंह रावत, कल्याण सिंह चौधरी सहित अन्य विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाएं मौजूद रही।

शब्द सामर्थ्य -015

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. जीत, फतेह 3. राशन सामान बेचने वाली एक जाति, वैश्य 6. मुर्गी की जाति की एक पक्षी, आधा... आधा बटेर 7. कमल, पंकज, भारत के एक दिवंगत प्रधानमंत्री का नाम 8. नहाने का स्थान, स्नानागार 10. ख्वाब, स्वप्न 12. बुलावा, निमंत्रण 14. तबाही, बर्बादी 17. कत्ल, वध 18. क्षतिपूर्ति, मुआवजा 19. करार, चैन, आराम 21. दृष्टि, निगाह 23. नाश करने योग्य 24. लाडला, प्यारा 25. सीताजी, जनकनंदनी।

ऊपर से नीचे

1. शादी, ब्याह 2. अनाथ, निराश्रित 3. साल, वर्ष 4. दोस्ताना, यारी 5. सुर, देव, भगवान 9. मनुष्य, इंसान, आदमी 11. पाटा जाना, चुकता करना, बात तय करना 12. कार्यक्षेत्र, गोल घेरा, वृत्त 13. अधीनता, मातहती, अधिकार 15. नगर 16. गैरजरूरी 20. दृष्टांत, सुपुर्दगी, उदाहरण 22. धरती, भूतल, धरातल।

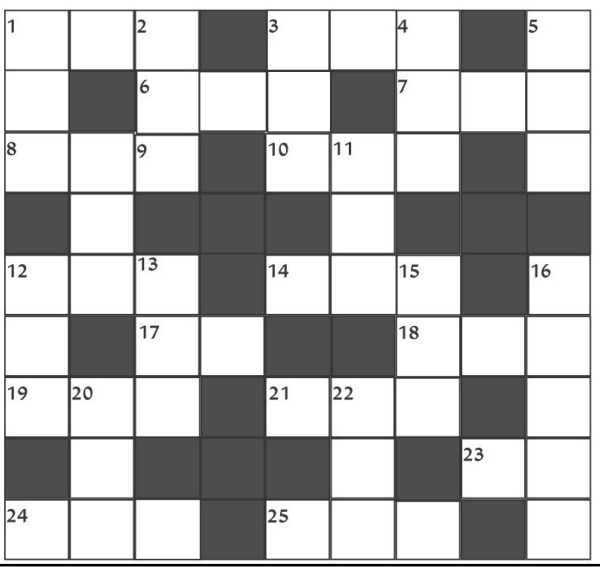

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 14 का हल

अं	त	■	म	री	ज	■	■	■
ग	ह	न	ता	■	ब	र	ब	स
■	की	■	धि	क्का	र	■	र	मा
■	का	■	का	■	द	वा	खा	ना
प	त	वा	र	■	स्त	र	■	■
ह	■	■	■	■	■	दा	मि	नी
ना	■	ए	ह	ति	या	त	■	लां
वा	च	क	■	हा	■	■	खू	ब
■	■	ता	ब	ड़	तो	ड़	■	र

याददाश्त बढ़ाने और मानसिक स्वास्थ्य को स्वस्थ रखने में मददगार हैं ये 5 जड़ी बूटियां

ऐसे कई लोग हैं, जो किसी न किसी कारणवश कई दिमागी समस्याओं से जूझ रहे हैं।इनके कारण सोचने-समझने की शक्ति कमजोर हो जाती है और व्यक्ति का दिमाग असंतुलित हो जाता है।हालांकि, आयुर्वेद चिकित्सा में लंबे समय से इस्तेमाल होने वाली कई जड़ी-बूटियां याददाश्त को बढ़ाने और मानसिक स्वास्थ्य को स्वस्थ रखने में मदद कर सकती हैं। इसलिए इन्हें डाइट में शामिल करना अच्छा है।आइए 5 सबसे लाभदायक जड़ी बूटियों के बारे में जानते हैं।

शंखपुष्पी को दूध में मिलाकर पिएं

अगर आप अपना ज्यादातर समय लैपटॉप या फोन पर बिता देते हैं या लंबे समय तक पढ़ाई करते हैं तो इससे मानसिक रूप से थकान हो जाती है।इससे आराम पाने के लिए शंखपुष्पी पाउडर को पानी या दूध के साथ मिलाकर पिएं।इसमें याददाश्त बढ़ाने वाले और आराम देने वाले गुण होते हैं, जो आपके दिमाग की काम करने की क्षमता को बढ़ाते हैं।साथ ही यह मानसिक थकान को दूर करके आपको सक्रिय भी रखती है।

गोटू कोला से होगा फायदा

गोटू कोला के बारे में शायद आप न जानते हो, लेकिन यह जड़ी-बूटी मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक साबित हो सकती है।यह चिंता और तनाव के लक्षण और इनसे जुड़ी समस्याओं को धीरे-धीरे दूर करने में काफी मदद कर सकती है। इसका कारण है कि इसमें एंटी-स्ट्रेस और एंटी-डिप्रेशन गुण मौजूद होते हैं।गोटू कोला में एंटी-एंग्जायटी गुण भी शामिल होता है, जो बेचैनी और व्याकुलता को कम कर सकते हैं।यहां जानिए गोटू कोला के फायदे।

अश्वगंधा भी है प्रभावी

अश्वगंधा के पाउडर का सेवन भी मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक माना जाता है।

रिपोर्ट के मुताबिक, 50 वयस्कों पर किए गए एक अध्ययन में याददाश्त, ध्यान, सोच, प्रतिक्रिया समय और सूचना-प्रक्रिया क्षमताओं में बड़े पैमाने पर सुधार देखा गया, जब उन्होंने 8 सप्ताह तक प्रतिदिन 600 मिलीग्राम अश्वगंधा अर्क का सेवन किया।दरअसल, इस जड़ी बूटी में एडाप्टोजेनिक होता है, जो मानसिक तनाव को कम करके दिमाग को आराम देती है।यहां जानिए अश्वगंधा के फायदे।

अकरकरा का करें सेवन

अकरकरा का इस्तेमाल लंबे समय से मानसिक स्वास्थ्य और संज्ञानात्मक कार्यप्रणाली में सुधार के लिए किया जाता आ रहा है।इसमें कुछ बायोएक्टिव छोटे अणु होते हैं, जो दिमाग के रसायनों को टूटने से रोकते हैं और याददाश्त, सोच, शांति, सतर्कता और ध्यान को बढ़ाते हैं।विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि इस प्राकृतिक घटक ने अल्जाइमर और अन्य मानसिक स्थितियों वाले रोगियों की स्थिति में सुधार किया है।

जटामांसी भी है लाभदायक जड़ी बूटी

जटामांसी भी एक प्रभावी मेमोरी बूस्टर के रूप में भी काम कर सकती है।यह सीखने और संज्ञानात्मक कौशल में सुधार कर सकती है। साथ ही यह एक पुनर्स्थापना एजेंट के रूप में कार्य करती है और कमजोर याददाश्त से पीड़ित लोगों की मदद करती है।लाभ के लिए जटामांसी के पाउडर को ब्राह्मी, अश्वगंधा और वाचा के साथ मिलाकर पानी के साथ निगलें।(आरएनएस)

दिल की आवाज से हल

जीतेंद्र चौधरी

आइये आज कुछ अलग तरह की बात करते हैं, लेकिन पहले आपको एक छोटी-सी कहानी सुनाना चाहता हूं। एक बार एक राजा ने सुंदर-सा महल बनाया और महल के मुख्य द्वार पर एक गणित का सूत्र लिखवाया और घोषणा की कि इस सूत्र से यह द्वार खुल जाएगा और जो भी सूत्र को हल करके द्वार खोलेगा, मैं उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दूंगा... राज्य के बड़े-बड़े गणितज्ञ आये और सूत्र देखकर लौट गए। किसी को कुछ समझ नहीं आया। आखिरी तारीख पर 3 लोग आये और कहने लगे कि हम इस सूत्र को हल कर देंगे। उसमें 2 तो दूसरे राज्य के बड़े गणितज्ञ अपने साथ बहुत से पुराने गणित के सूत्रों की किताबों सहित आये। लेकिन एक व्यक्ति जो साधक की तरह नजर आ रहा था, कुछ भी साथ नहीं लाया। उसने कहा कि मैं यहीं पास में ध्यान कर रहा हूं। उसने कहा-पहले इन्हें मौका दिया जाये। दोनों सूत्र हल नहीं कर पाये और उन्होंने हार मान ली। अंत में उस साधक को ध्यान से जगाया गया और कहा कि आप सूत्र हल करिये।

साधक ने आंखें खोली और सहज मुस्कान के साथ द्वार की ओर चला। उसने द्वार को धकेला और यह क्या... द्वार खुल गया। राजा ने साधक से पूछा कि आपने ऐसा क्या किया साधक ने कहा जब मैं ध्यान में बैठा तो सबसे पहले अंतर्मन से आवाज आई कि पहले चेक कर ले कि सूत्र है भी या नहीं, इसके बाद इसे हल करने की सोचना और ध्यान के बाद जब बारी आयी तो मैंने वही किया। इसी तरह हम अपने जीवन में कल्पित समस्याओं की जटिलताओं से जूझते रहते हैं। जबकि हकीकत में ये सिर्फ हमारी महज आशंकाएं ही होती हैं। यह उदाहरण हमें जीवन में सकारात्मक राह दिखाता है। ऐसे ही कई बार जिंदगी में समस्या होती ही नहीं और हम विचारों में उसे इतनी बड़ी बना लेते हैं कि वह समस्या कभी हल न होने वाली है लेकिन हर समस्या का उचित इलाज आत्मा की आवाज है। साथियों आज ज्ञान यहीं तक था, किसी भी समस्या को इतना बड़ा मत बनाइए कि वो आप पर हावी हो जाए, अपने दिल की बात सुनिए, ऐसी कोई समस्या ही नहीं, जिसका कोई समाधान न हो।

हारी सीटों पर भाजपा की 'किलेबंदी'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड विधानसभा चुनाव 2027 को लेकर भाजपा ने अपनी चुनावी तैयारियों को और धार देना शुरू कर दिया है। लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी के लक्ष्य के साथ पार्टी अब उन विधानसभा क्षेत्रों पर विशेष नजर रख रही है, जहां पिछले चुनाव में भाजपा को हार का सामना करना पड़ा था। इन सीटों को जीत में बदलने के लिए पार्टी संगठन ने जमीनी स्तर पर सक्रियता बढ़ाने की रणनीति बनाई है। इसी कड़ी में भाजपा कोर कमेटी के सदस्यों को विधानसभावार संगठनात्मक प्रवास की जिम्मेदारी दिए जाने की तैयारी है। संबंधित वरिष्ठ नेता अपने-अपने निर्धारित विधानसभा क्षेत्रों में जाकर संगठन की वास्तविक स्थिति का आकलन करेंगे। बूथ स्तर की सक्रियता, कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय, स्थानीय मुद्दों और चुनावी माहौल की जानकारी जुटाने के साथ ही पिछले चुनाव में हार के कारणों की भी पड़ताल की जाएगी। भाजपा के लिए यह कवायद इसलिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि 2027 का विधानसभा चुनाव अब ज्यादा दूर नहीं है। पार्टी सत्ता की हैट्रिक लगाने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रही है, वहीं कांग्रेस समेत विपक्षी दल भी संगठन को मजबूत करने में जुटे हैं।

चुनाव में किसी सीट पर हार सिर्फ उम्मीदवार की हार नहीं होती। उसके पीछे संगठन की कमजोरी, स्थानीय नाराजगी, बूथ प्रबंधन, टिकट को लेकर असंतोष और चुनावी रणनीति की कमी जैसे कई कारण हो सकते हैं। भाजपा अब इन्हीं पहलुओं की समीक्षा करना चाहती है। कोर कमेटी के सदस्य जब विधानसभा क्षेत्रों में प्रवास करेंगे तो वहां पार्टी पदाधिकारियों, मंडल और बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं से संवाद किया जाएगा। स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं से यह समझने की कोशिश होगी कि आखिर पिछले चुनाव में पार्टी कहां कमजोर रही। क्या प्रत्याशी को लेकर नाराजगी थी?क्या स्थानीय संगठन सक्रिय नहीं था?क्या बूथ प्रबंधन में कमी रह गई? क्या पार्टी के पक्ष में माहौल होने के बावजूद वोटों का सही प्रबंधन नहीं हो पाया? या फिर स्थानीय स्तर पर कोई ऐसा मुद्दा था, जिसने चुनावी समीकरण बदल दिया? इन सभी सवालों के जवाब तलाशने की कोशिश होगी।

भाजपा की चुनावी राजनीति में बूथ प्रबंधन को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसे में हारी हुई विधानसभा सीटों पर पार्टी की रणनीति का केंद्र बूथ ही रहने वाला है। कहां पार्टी के बूथ कमजोर हैं, किन बूथों पर कार्यकर्ता सक्रिय नहीं हैं, किन क्षेत्रों में मतदाताओं के साथ संपर्क कमजोर है और किन इलाकों में विपक्ष को बढ़त मिली थीकृइन बिंदुओं पर फोकस

❑कोर कमेटी को विधानसभावार संगठनात्मक प्रवास की जिम्मेदारी
❑कमजोर बूथों से लेकर नाराज कार्यकर्ताओं तक की होगी पड़ताल
❑विस चुनाव 2027 से पहले हार वाली सीटों पर भाजपा का फोकस

किया जाएगा। पार्टी की कोशिश होगी कि चुनाव से काफी पहले बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत कर दिया जाए, ताकि चुनाव के समय अचानक सक्रिय होने के बजाय कार्यकर्ता लगातार मतदाताओं के संपर्क में रहें। किसी भी चुनाव में संगठन की सबसे बड़ी ताकत कार्यकर्ता होता है। लेकिन चुनाव हारने के बाद कई बार कार्यकर्ताओं में निराशा और स्थानीय नेतृत्व को लेकर नाराजगी भी सामने आती है। भाजपा की संगठनात्मक प्रवास योजना में ऐसे कार्यकर्ताओं से संवाद को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

पार्टी यह जानना चाहेगी कि स्थानीय स्तर पर कार्यकर्ताओं की क्या शिकायतें हैं। विधायक, पूर्व प्रत्याशी और संगठन के बीच तालमेल कैसा है। स्थानीय नेताओं के बीच मतभेद तो नहीं हैं और कार्यकर्ताओं को चुनावी अभियान में किस तरह अधिक प्रभावी भूमिका दी जा सकती है। क्योंकि चुनाव सिर्फ बड़े नेताओं की सभाओं से नहीं जीता जाता। चुनाव बूथ पर खड़ा कार्यकर्ता जिताता है। उत्तराखंड की राजनीति में स्थानीय मुद्दों की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है। सड़क, रोजगार, पलायन, शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि, पेयजल और क्षेत्रीय विकास जैसे मुद्दे विधानसभा चुनाव में मतदाताओं के फैसले को प्रभावित करते हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेताओं का प्रवास इसलिए भी अहम होगा कि पार्टी को प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र की अलग राजनीतिक तस्वीर मिल सके। एक सीट पर जो मुद्दा महत्वपूर्ण है, जरूरी नहीं कि दूसरी सीट पर भी वही मुद्दा चुनावी प्रभाव रखता हो। इसलिए विधानसभा स्तर पर अलग रणनीति बनाने की दिशा में भी पार्टी आगे बढ़ सकती है।

संगठनात्मक प्रवास का उद्देश्य केवल रिपोर्ट तैयार करना नहीं माना जा रहा। पार्टी की कोशिश समस्याओं की पहचान के साथ उनके समाधान की दिशा में भी काम करने की होगी जहां संगठन कमजोर है, वहां नए सिरे से जिम्मेदारी तय की जा सकती है, जहां कार्यकर्ताओं में नाराजगी है, वहां संवाद बढ़ाया जा सकता है, जहां बूथ कमजोर हैं, वहां बूथ समितियों को सक्रिय किया जा सकता है और जहां स्थानीय स्तर पर नेतृत्व को लेकर असंतोष है, वहां वरिष्ठ नेताओं के माध्यम से स्थिति संभालने की कोशिश होगी। उत्तराखंड में भाजपा लगातार दो विधानसभा चुनावों में सरकार बनाने में सफल रही है। अब पार्टी के सामने 2027 में सत्ता की हैट्रिक लगाने की चुनौती है। लेकिन तीसरी बार सत्ता में लौटने के लिए पार्टी को केवल अपनी मजबूत सीटों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा। उसे उन सीटों पर भी प्रदर्शन सुधारना होगा, जहां पिछले चुनाव में उसे झटका लगा था। यही वजह है कि हारी हुई विधानसभा सीटें अब भाजपा की चुनावी रणनीति के केंद्र में आती दिख रही हैं। पार्टी की कोशिश साफ है जहां पिछली बार कमी रह गई, वहां इस बार कोई गुंजाइश न छोड़ी जाए।

भाजपा की यह कवायद विपक्ष के लिए भी एक राजनीतिक संकेत है। जब सत्तारूढ़ दल चुनाव से महीनों पहले हारी हुई सीटों पर संगठनात्मक प्रवास शुरू कर रहा है, तो इसका अर्थ है कि पार्टी चुनाव को लेकर पूरी तरह सक्रिय मोड में आ चुकी है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के लिए भी यह चुनौती होगी कि वह इन विधानसभा क्षेत्रों में अपनी पकड़ मजबूत करें और भाजपा की रणनीति का मुकाबला करने के लिए बूथ स्तर तक संगठन को सक्रिय करें। 2027 का चुनाव अभी सामने नहीं आया है, लेकिन उसकी तैयारी जमीन पर शुरू हो चुकी है। भाजपा का संदेश साफ हैकृकि पिछली हार को भूलना नहीं है, उससे सीखना है। हारी हुई सीटों पर संगठन को भेजना है। कमजोर बूथों को मजबूत करना है। नाराज कार्यकर्ताओं को साथ लाना है। स्थानीय मुद्दों को समझना है और फिर उस पूरी तैयारी को चुनावी जीत में बदलना है। अब देखना होगा कि भाजपा की यह संगठनात्मक कवायद 2027 में कितनी सीटों का राजनीतिक गणित बदल पाती है।

33 पर्वतारोहियों का चयन होगा

चम्पावत(आरएनएस)। इस वर्ष सितंबर और अक्तूबर में पर्वतारोहण अभियान का आयोजन किया जाएगा। इन अभियान के लिए 33 पर्वतारोहियों का चयन किया जाएगा।

जिला पर्यटन विकास अधिकारी लता बिष्ट ने बताया कि पर्वतारोहण अभियान के लिए युवाओं का चयन किया जाएगा। बताया कि अगले सितंबर और अक्तूबर में 6,316 मीटर ऊंचे माउंट भागीरथी और 6,349 मीटर ऊंचे माउंट पंचाचूली के लिए चयन किया जाएगा। बताया कि कुल 33 पर्वतारोहियों का चयन किया जाएगा। हर दल में 11 प्रतिभागी शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि तीन सितंबर तक आवेदन जमा किए जाएंगे।

समायोजन व्यवस्था पर भड़का शिक्षक संघ

कोटद्वार(आरएनएस)। अटैचमेंट व्यवस्था पर रोक के बावजूद शिक्षा विभाग की ओर से बड़ी संख्या में शिक्षकों को देहरादून के सुगम विद्यालयों में समायोजन (कार्ययोजित) किए जाने का मामला तूल पकड़ने लगा है। इस निर्णय से शिक्षकों में नाराजगी बढ़ गई है। राजकीय शिक्षक संघ ने इसे वर्षों से दुर्गम क्षेत्रों में सेवाएं दे रहे शिक्षकों के साथ अन्याय बताते हुए तत्काल समायोजन व्यवस्था समाप्त करने की मांग की है। राजकीय शिक्षक संघ के मंडलीय अध्यक्ष जयदीप रावत और मंत्री मनमोहन सिंह चौहान ने प्रांतीय कार्यकारिणी को भेजे पत्र में कहा है कि जब विभाग ने अटैचमेंट व्यवस्था समाप्त कर दी है तब कार्ययोजित के नाम पर शिक्षकों को सुगम विद्यालयों में भेजना उसी व्यवस्था का दूसरा रूप है।

नर्सिंग कॉलेज में प्रतियोगिताएं होंगी

चम्पावत(आरएनएस)। माई भारत युवा कार्यक्रम नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत अभियान के तहत दस अगस्त को नर्सिंग कॉलेज चम्पावत में जिला स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन करेगा। इस दौरान चित्रकला, स्लोगन लेखन, भाषण, कविता पाठ, संगीत, नृत्य, नुक्कड़ नाटक तथा रील, शॉर्ट वीडियो निर्माण आदि प्रतियोगिता होंगी। प्रतियोगिता में 15 से 29 वर्ष के युवा हिस्सा ले सकेंगे। माई भारत पोर्टल में ऑनलाइन पंजीकरण होंगे।

वीबीजीरामजी योजना के विरोध में उतरे प्रधान

कोटद्वार(आरएनएस)। केंद्र सरकार की ओर से लागू की जा रही संशोधित वीबीजीरामजी योजना और पंचायतीराज व्यवस्था में बढ़ते प्रशासनिक हस्तक्षेप के विरोध में रिखणीखाल प्रधान संगठन ने मोर्चा खोल दिया है। ब्लॉक मुख्यालय में आयोजित संगठन की बैठक में प्रधानों ने कहा कि नई व्यवस्थाओं से ग्राम पंचायतों के विकास कार्य प्रभावित हो रहे हैं और जनप्रतिनिधियों के अधिकारों में लगातार हस्तक्षेप बढ़ रहा है।बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि जब तक पूर्व में कराए गए मनरेगा कार्यों का सामग्री भुगतान और श्रमिकों की मजदूरी का निस्तारण नहीं हो जाता तब तक कम से कम एक माह तक वीबीजीरामजी योजना के तहत कार्य शुरू नहीं किया जाएगा।प्रधानों ने मांग की कि क्षेत्र पंचायत की बैठक का समय सुबह 11 के बजाय 1० बजे निर्धारित किया जाए। बैठकों में पंचायतों से जुड़े मुद्दों पर गंभीरता से चर्चा हो और सभी विभागों के अधिकारियों की उपस्थिति अनिवार्य की जाए। इसके अलावा संविदा कर्मियों के मानदेय के लिए पंचायत निधि (टाइड एवं अनटाइड फंड) से चार प्रतिशत कटौती बंद करने, सभी ग्राम पंचायतों को बुश कटर उपलब्ध कराने, विवेकाधीन निधि का बजट बढ़ाने और ग्राम प्रधानों का मानदेय बढ़ाने की मांग की।

बैठक के बाद प्रधान संगठन ने मांगों से संबंधित ज्ञापन खंड विकास अधिकारी रिखणीखाल को सौंपा। इसके बाद संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने ब्लॉक प्रमुख रेनू रावत से भी मुलाकात कर समस्याओं से अवगत कराया। बैठक में ठाकुर सिंह, सत्यपाल सिंह, रेखा देवी, शांति देवी, सुनीता देवी, संगीता, रणबीर, कुलदीप, पूजा गुसाईं, प्रियंका ने विचार रखे। प्रधान संगठन की ब्लॉक अध्यक्ष अरुणा रानी रावत की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में करीब 39 ग्राम पंचायतों के प्रधान मौजूद रहे।

बौराड़ी बस अड्डे में खोखे तोड़ने पर जताया विरोध

नई टिहरी(आरएनएस)। बौराड़ी बस अड्डे में पुनर्वास विभाग की ओर से आवंटित जगहों पर खोखे तोड़े जाने का खोखा धारकों ने विरोध किया है। उन्होंने जिलाधिकारी को सौंपे ज्ञापन में प्रभावित सभी खोखा धारकों को क्षतिपूर्ति और उसी स्थान पर पक्की दुकानें देने की मांग उठाई है।बौराड़ी बस अड्डे का इन दिनों एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) के वित्तीय सहयोग से सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। बस अड्डे में 32 खोखा धारकों को पूर्व में पुनर्वास विभाग ने जगह उपलब्ध करवाई थी। कार्य के चलते गत 5 अगस्त को एडीबी और पर्यटन विभाग की टीम ने जेसीबी से 1० खोखो को तोड़ दिया था। कांग्रेस शहर अध्यक्ष कुलदीप पंवार के नेतृत्व में खोखा धारक डीएम से मिले। उन्होंने कहा कि वह विगत 35 सालों से नई टिहरी शहर में कच्ची दुकानों के सहारे रोजगार कर अपने परिवार की आजीविका चला रहे हैं। बिना नोटिस के एडीबी और पर्यटन विभाग ने कई लोगों के खोखे तोड़ दिए जिससे उसके सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया है।उन्होंने डीएम से पुनर्वास विभाग की ओर से आवंटित जगहों पर ही सभी को पक्की दुकानें बनाकर जल्द देने की मांग की है। डीएम ने सकारात्मक कार्यवाही का भरोसा दिया है। इस मौके पर बुद्धिपाल परमार, नित्यानंद बहुगुणा, राकेश नेगी, गीता सजवाण, सोमवारी लाल, प्रवीन भट्ट आदि शामिल थे।

नव प्रवेशी विद्यार्थियों को नई शिक्षा नीति की जानकारी दी

विकासनगर(आरएनएस)। श्री गुलाब सिंह राजकीय महाविद्यालय चकराता में नव प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए इंडक्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों को महाविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, पाठ्यक्रम,छात्रवृत्ति योजनाओं एवं विभिन्न शैक्षणिक संसाधनों से परिचित कराया गया। प्राचार्य प्रो. आशुतोष सारण ने कहा कि महाविद्यालय केवल उच्च शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्यों के विकास, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का सशक्त मंच है। उन्होंने विद्यार्थियों से नियमित अध्ययन, समय का सदुपयोग, शिक्षकों के मार्गदर्शन का सम्मान करने तथा महाविद्यालय की शैक्षणिक, सांस्कृतिक, खेल एवं अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया।उन्होंने कहा कि मेहनत, लगन और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने वाले विद्यार्थी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं तथा अपने परिवार, महाविद्यालय और राष्ट्र का नाम गौरवान्वित करते हैं। डॉ. मुकेश कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों को महाविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था, विभिन्न विभागों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, अज़ीम प्रेमजी छात्रवृत्ति, नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल और मुख्यमंत्री छात्रवृत्ति योजना समेत विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने विद्यार्थियों को महाविद्यालय में उपलब्ध अवसरों का पूरा लाभ उठाने तथा समय पर छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने के लिए प्रेरित किया। इसके उपरांत डॉ. अभय शिखर पंवार ने विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षण मंचों के माध्यम से अपने ज्ञान और कौशल का निरंतर विकास करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऐपन सिंह ने किया।

सैन्यभूमि के युवाओं को 'सहारा'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड को सैनिकों की भूमि के रूप में पहचान दिलाने वाले राज्य में अग्निवीरों के भविष्य को लेकर सरकार ने एक महत्वपूर्ण पहल की है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य में स्थापित अग्निवीर पुनर्रोजगार सेल का उद्देश्य सेना में सेवा पूरी करने वाले अग्निवीरों को उनके कौशल और योग्यता के अनुरूप रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। सरकार की इस पहल का फोकस सिर्फ अग्निवीरों को रोजगार उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि सेना में मिले अनुशासन, प्रशिक्षण और तकनीकी दक्षता को नागरिक क्षेत्र में उपयोगी रोजगार से जोड़ना भी है। उत्तराखंड जैसे सैन्य बहुल राज्य के लिए यह पहल खास महत्व रखती है। राज्य के हजारों परिवारों की पीढ़ियां सेना से जुड़ी रही हैं। ऐसे में अग्निवीर योजना के तहत सेवा में जाने वाले युवाओं के लिए सेवा अवधि के बाद रोजगार और भविष्य की सुरक्षा बड़ा विषय रहा है। इसी चुनौती को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पुनर्रोजगार की व्यवस्था को संस्थागत रूप देने की दिशा में कदम बढ़ाया है।

अग्निवीरों को सेना में सीमित अवधि की सेवा के दौरान सैन्य प्रशिक्षण के साथ अनुशासन, नेतृत्व, तकनीकी दक्षता और टीमवर्क का अनुभव मिलता है। सरकार का प्रयास है कि सेवा समाप्त होने के बाद इन कौशलों को रोजगार के अवसरों से जोड़ा जाए। इसके लिए पुनर्रोजगार सेल विभिन्न विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों, निजी क्षेत्र और अन्य रोजगार प्रदाताओं के साथ समन्वय की भूमिका निभा सकता है। अग्निवीरों की योग्यता और कौशल के आधार पर उन्हें उपयुक्त अवसरों की जानकारी उपलब्ध कराने, रोजगार मेलों से जोड़ने और आवश्यक मार्गदर्शन देने पर जोर रहेगा। उत्तराखंड में सेना सिर्फ रोजगार का माध्यम नहीं रही है। यहां सेना के प्रति भावनात्मक जुड़ाव भी गहरा है। पर्वतीय क्षेत्रों के अनेक परिवारों में आज भी सेना की वर्दी गौरव का प्रतीक मानी जाती है। ऐसे में अग्निवीरों के भविष्य को लेकर राज्य सरकार की पहल का सामाजिक महत्व भी है। सरकार का संदेश है कि जो युवा देश की सुरक्षा के लिए अपनी सेवाएं देंगे, उनके भविष्य को लेकर राज्य भी अपनी जिम्मेदारी निभाएगा। यही वजह है कि पुनर्रोजगार सेल को केवल सरकारी योजना के रूप में नहीं, बल्कि

◆उत्तराखंड में अग्निवीरों के लिए पुनर्रोजगार सेल गठित, सेवा के बाद मिलेगा रोजगार
◆देश के पहले अग्निवीर पुनर्रोजगार सेल से हर सैनिक को रोजगार से जोड़ने की तैयारी
◆सेवा के बाद भविष्य सुरक्षित करने पर जोर, रोजगार के लिए बन रहा है मजबूत तंत्र

पूर्व सैनिकों और अग्निवीरों के लिए रोजगार का पुल बनाने की पहल के तौर पर देखा जा रहा है।

सरकारी क्षेत्र में रोजगार की सीमित संभावनाओं को देखते हुए निजी क्षेत्र की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी। अग्निवीरों के सैन्य प्रशिक्षण और कौशल का इस्तेमाल सुरक्षा सेवाओं, आपदा प्रबंधन, लाजिस्टिक्स, तकनीकी कार्यों, प्रशासनिक जिम्मेदारियों और अन्य क्षेत्रों में किया जा सकता है। राज्य सरकार की कोशिश होगी कि निजी कंपनियां भी प्रशिक्षित अग्निवीरों को रोजगार के लिए प्राथमिकता दें और उनके कौशल का उपयोग करें। अगर यह माडल प्रभावी ढंग से लागू होता है तो उत्तराखंड देश के अन्य राज्यों के सामने एक उदाहरण भी प्रस्तुत कर सकता है। उत्तराखंड की सबसे बड़ी चुनौतियों में पलायन शामिल है। रोजगार की तलाश में बड़ी संख्या में युवा मैदानी शहरों और दूसरे राज्यों की ओर जाते हैं। सेना में सेवा के बाद यदि युवाओं को राज्य में ही रोजगार के बेहतर अवसर मिलते हैं तो इसका सीधा असर पलायन पर भी पड़ सकता है। खासकर पहाड़ी जिलों के युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर तैयार करना जरूरी है। अग्निवीरों के पास अनुशासन और प्रशिक्षण के साथ कार्य करने का अनुभव होगा। ऐसे युवाओं को राज्य के रोजगार तंत्र से जोड़ना स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए भी उपयोगी साबित हो सकता है।

हालांकि किसी भी सरकारी पहल की सफलता इस बात से तय होगी कि वह जमीन पर कितना प्रभाव डालती है। सिर्फ सेल बन जाना पर्याप्त नहीं होगा। जरूरी यह होगा कि अग्निवीरों को वास्तविक रोजगार के अवसर मिलें। निजी क्षेत्र के साथ ठोस समझौते हों। रोजगार की जानकारी समय पर मिले और युवाओं को आवेदन से लेकर चयन तक उचित मार्गदर्शन उपलब्ध हो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह होगी कि अग्निवीरों की योग्यता के अनुरूप सम्मानजनक और स्थायी रोजगार के अवसर तैयार किए जाएं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में शुरू की गई यह पहल उत्तराखंड की सैन्य पृष्ठभूमि और युवाओं की आकांक्षाओं से सीधे जुड़ी है। सरकार के सामने अब चुनौती इस पहल को एक प्रभावी रोजगार मॉडल में बदलने की है। अगर हर सेवा पूर्ण करने वाले अग्निवीर को उसकी योग्यता के अनुसार रोजगार का अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में ठोस व्यवस्था बनती है तो यह राज्य के युवाओं के लिए बड़ा भरोसा बन सकती है। क्योंकि सैनिक बनना सिर्फ वर्दी पहनना नहीं है। इसके पीछे एक परिवार की उम्मीद होती है। एक गांव का सपना होता है और देश की सेवा का संकल्प होता है। ऐसे में सेवा पूरी होने के बाद उस युवा से यह कहना पर्याप्त नहीं होगा कि अब आप नौकरी तलाशिए। जरूरत ऐसी व्यवस्था की है जो उससे कहे देश की सेवा आपने की है, अब आपके कौशल को रोजगार से जोड़ना हमारी जिम्मेदारी है। यही अग्निवीर पुनर्रोजगार सेल की सबसे बड़ी कसौटी होगी।

कपड़े के थैले बांट सिंगल यूज प्लास्टिक के दुष्परिणाम को किया जागरूक

ऋषिकेश (आरएनएस)। नगर पालिका परिषद डोईवाला ने सिंगल यूज प्लास्टिक की रोकथाम को लेकर विशेष जागरूकता अभियान चलाया।अभियान का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता को बढ़ावा देना था। इस दौरान नगर क्षेत्र में लोगों को कपड़े के थैले वितरित किए गए और उनसे प्लास्टिक का उपयोग न करने की अपील की गई। अधिकारियों ने बताया कि सिंगल यूज प्लास्टिक न केवल प्रदूषण बढ़ाता है बल्कि नदियों और जलस्रोतों को भी नुकसान पहुंचाता है। इसके चलते नगर पालिका ने स्थानीय दुकानदारों और नागरिकों को जागरूक करने के लिए यह पहल की है। अभियान के दौरान लोगों को समझाया गया कि कपड़े या जूट के थैले लंबे समय तक उपयोग किए जा सकते हैं और यह पर्यावरण के लिए भी सुरक्षित हैं।

स्थानीय नागरिकों ने इस पहल का स्वागत किया और कपड़े के थैले अपनाने का संकल्प लिया। नगर पालिका परिषद का कहना है कि ऐसे अभियान लगातार चलाए जाएंगे ।

एसआईआर का जायजा लेने बूथों पर पहुंचे डीएम, बोले- नोटिस मिलने पर घबराने की जरूरत नहीं

हरिद्वार (आरएनएस)। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कार्यक्रम के दूसरे चरण के तहत जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने ज्वालापुर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मतदाताओं से संवाद कर एसआईआर की प्रगति की जानकारी ली और अधिकारियों को नोटिस से जुड़े मामलों की सुनवाई पूरी पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि नोटिस मिलने पर किसी भी मतदाता को घबराने की आवश्यकता नहीं है।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने एसआईआर के तहत मतदाताओं को जारी किए गए नोटिसों पर प्राप्त आपत्तियों और अभिलेखों की सुनवाई की प्रक्रिया का अवलोकन किया।उन्होंने संबंधित एआरओ और बीएलओ को निर्देश दिए कि सभी मामलों का निस्तारण भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप पारदर्शी और निष्पक्ष तरीके से किया जाए। जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने कहा कि यदि किसी मतदाता को किसी प्रकार की विसंगति या अनमैपिंग के संबंध में नोटिस प्राप्त हुआ है तो उसे परेशान होने की जरूरत नहीं है। उन्होंने बताया कि निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित 11 वैध अभिलेखों में से कोई भी एक दस्तावेज प्रस्तुत करने पर पात्र मतदाता का नाम मतदाता सूची से नहीं हटाया जाएगा। अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए गए कि प्रत्येक मतदाता को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई जाए और सभी प्रकरणों का समयबद्ध एवं नियमानुसार निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि जनपद में एसआईआर की पूरी प्रक्रिया पूरी पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ संचालित की जा रही है। इस कार्य में सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों का भी सकारात्मक सहयोग मिल रहा है, जिससे प्रक्रिया की विश्वसनीयता बनी हुई है। जिलाधिकारी ने दोहराया कि किसी भी पात्र मतदाता को उसके मताधिकार से वंचित नहीं होने दिया जाएगा।

'ठंडी हवा' के बीच चढ़ा 'सियासी पारा'

राजनीति

- कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे की कुमाऊं रैली ने कांग्रेस में फूंकी नई जान
- अब सवाल जोश वोट में बदलेगा या फिर रह जाएगा मंच तक ही
- कुमाऊं से कांग्रेस का चुनावी संदेश कार्यकर्ताओं में दिखा उत्साह

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। कुमाऊं की जमीन पर कांग्रेस की राजनीति को एक बार फिर आवाज मिली है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की रैली ने पार्टी के उन कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा भरने की कोशिश की है, जो लंबे समय से सत्ता पक्ष के सामने खुद को कमजोर महसूस कर रहे थे। मंच पर भाषण थे, नारे थे, भीड़ थी और चुनावी दावे भी। लेकिन इन सबके बीच सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या यह रैली कांग्रेस के भीतर पैदा हुई राजनीतिक सुस्ती को सचमुच तोड़ पाएगी? या फिर कुछ घंटों की राजनीतिक गर्मी के बाद पहाड़ की ठंडी हवा सब कुछ पहले जैसा कर देगी? यही सवाल कांग्रेस के सामने है। कुमाऊं उत्तराखंड की राजनीति में सिर्फ एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं है। यहां की विधानसभा सीटें प्रदेश की सत्ता का रास्ता तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष का कुमाऊं पहुंचना अपने आप में राजनीतिक संदेश है। कांग्रेस यह बताना चाहती है कि वह 2027 की लड़ाई के लिए तैयार हो रही है। लेकिन चुनाव की तैयारी मंच से ज्यादा जमीन पर दिखाई देती है।

कांग्रेस के लिए सबसे बड़ी जरूरत इस समय केवल भाषण नहीं, भरोसा है। कार्यकर्ता पूछता है पार्टी की रणनीति क्या है?कौन नेतृत्व करेगा? उम्मीदवारों का चयन कैसे होगा? बूथ पर संगठन कितना मजबूत है? और सबसे बड़ा सवाल क्या कांग्रेस इस बार भाजपा को सीधी चुनौती देने की स्थिति में है? खड़गे की रैली ने कम से कम इतना जरूर किया कि पार्टी के भीतर यह संदेश गया कि केंद्रीय नेतृत्व उत्तराखंड को नजरअंदाज नहीं कर रहा। कार्यकर्ता के लिए बड़े नेता का मैदान में उतरना सिर्फ राजनीतिक कार्यक्रम नहीं होता। संघर्ष की स्वीकृति के रूप में भी देखता है। यही वजह है कि रैली के बाद कांग्रेस के भीतर उत्साह दिखाई देना स्वाभाविक है। लेकिन उत्साह और चुनावी संगठन के बीच काफी लंबी दूरी होती है।

कुमाऊं की जनता के सामने मुद्दे किसी रैली के साथ पैदा नहीं हुए हैं। रोजगार का सवाल पुराना है। पलायन का दर्द पुराना है। स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी पुरानी है। युवाओं की प्रतियोगी परीक्षाओं को लेकर चिंता पुरानी है। सड़क, पानी और शिक्षा के सवाल भी पुराने हैं। राजनीतिक दल आते हैं, भाषण करते हैं, वादे करते हैं और चले जाते हैं। जनता फिर वही सवाल लेकर खड़ी रह जाती है। इसलिए खड़गे की रैली का राजनीतिक असर इस बात से तय नहीं होगा कि मंच पर कितने नारे लगे। असर इस बात से तय होगा कि कांग्रेस इन सवालों को कितनी मजबूती से गांव तक लेकर जाती है।

कांग्रेस के सामने एक आसान रास्ता है भाजपा सरकार की आलोचना करना। सत्ता में रहने वाली पार्टी से सवाल पूछना विपक्ष का अधिकार भी है और जिम्मेदारी भी। लेकिन सिर्फ सवाल पूछने से विपक्ष मजबूत नहीं होता। जनता को यह भी बताना पड़ता है कि अगर सत्ता मिली तो क्या बदलेगा? पलायन रोकने की ठोस नीति क्या होगी? युवा को रोजगार कैसे मिलेगा? पहाड़ के अस्पतालों में डाक्टर कैसे पहुंचेंगे? सरकारी स्कूल कैसे मजबूत होंगे? स्थानीय अर्थव्यवस्था को कैसे खड़ा किया जाएगा? महिलाओं की आय और सुरक्षा के लिए क्या किया जाएगा? कांग्रेस अगर इन सवालों के स्पष्ट जवाब जनता के सामने रखती है तो खड़गे की रैली एक बड़े राजनीतिक अभियान की शुरुआत बन सकती है। वरना यह भी दूसरी राजनीतिक रैलियों की तरह भीड़ और भाषणों की खबर बनकर रह जाएगी।

पेज एक का शेष... आस्था और...

तेज धूप हो या बारिश, उनकी ड्यूटी लगातार चलती रहती है। कई जवानों के लिए यह केवल कुछ घंटों की ड्यूटी नहीं होती। उन्हें लगातार कई शिफ्ट में भीड़ के बीच काम करना पड़ता है। भीड़ का मनोविज्ञान समझना पड़ता है। कहां बैरिकेडिंग करनी है? कहां रास्ता खोलना है? कहां भीड़ को रोकना है? कहां एंबुलेंस को रास्ता देना है? हर निर्णय तत्काल लेना पड़ता है। बड़े धार्मिक आयोजनों में भीड़ प्रबंधन सबसे संवेदनशील कामों में से एक है। डाक कांवड़ में यह चुनौती और बढ़ जाती है, क्योंकि श्रद्धालुओं की संख्या के साथ उनकी गति भी तेज होती है। पुलिस के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि किसी अफवाह को फैलने से रोका जाए। सोशल मीडिया के दौर में छोटी–सी गलत सूचना भी कुछ ही मिनटों में हजारों लोगों तक पहुंच सकती है। ऐसे में पुलिस को केवल सड़क पर नहीं, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी निगरानी रखनी पड़ती है। सीसीटीवी, ड्रोन, कंट्रोल रूम और वायरलेस नेटवर्क के जरिए स्थिति पर नजर रखी जाती है। संवेदनशील स्थानों पर अतिरिक्त निगरानी की जरूरत पड़ती है।कांवड़ यात्रा आस्था का पर्व है। पुलिस की भूमिका यहां सिर्फ कानून लागू करने की नहीं, बल्कि आस्था और व्यवस्था के बीच संतुलन बनाने की भी होती है। कांवड़िए देश के अलग–अलग हिस्सों से आते हैं। उनके लिए हरिद्वार की यात्रा धार्मिक भावनाओं से जुड़ी होती है। ऐसे में पुलिस को भीड़ से संवाद करते हुए व्यवस्था बनाए रखनी होती है। जहां जरूरी हो, सख्ती करनी पड़ती है। लेकिन सख्ती का मतलब संवेदनशीलता खत्म करना नहीं है।

सीएम ने दिए तीलू रौतेली व आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार

मातृशक्ति का सम्मान

सीएम ने की घोषणा

- तीलू रौतेली पुरस्कार की सम्मान राशि 51 हजार से बढ़ाकर 75, आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार की राशि 51 हजार से बढ़ाकर 61 हजार रुपये करने की मुख्यमंत्री ने की घोषणा
- मुख्यमंत्री बोले– मातृशक्ति के सम्मान, सुरक्षा और आर्थिक सशक्तीकरण के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध

तीलू रौतेली जयंती पर 13 महिलाओं को तीलू रौतेली पुरस्कार,35 आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों को आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री पुरस्कार प्रदान किए

संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय स्थित मुख्य सेवक सदन में आयोजित तीलू रौतेली एवं आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली प्रदेश की 13 महिलाओं को तीलू रौतेली पुरस्कार तथा 35 आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों को आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री पुरस्कार से सम्मानित किया। मुख्यमंत्री ने पुरस्कार प्राप्त करने वाली सभी महिलाओं एवं आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि तीलू रौतेली जयंती उत्तराखंड के इतिहास और नारी शक्ति के स्वाभिमान के लिए गौरवशाली अवसर है। वीरांगना तीलू रौतेली अदम्य साहस, अद्वितीय पराक्रम और नारी शक्ति की अमर प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड वीरों के साथ–साथ वीरांगनाओं की भूमि भी रही है और जब भी वीरांगनाओं के साहस एवं पराक्रम की चर्चा होगी, तीलू रौतेली जी का नाम गर्व और सम्मान के साथ लिया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि तीलू रौतेली जी का जीवन स्वाभिमान, साहस और नारी शक्ति का प्रेरणादायी प्रतीक है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड की बेटियों ने सदैव अपनी प्रतिभा, साहस और सामर्थ्य से प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। आज सम्मानित की गई महिलाएं भी प्रदेश की अन्य मातृशक्ति और बेटियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने वर्ष 2023 में तीलू रौतेली पुरस्कार की सम्मान राशि को 31 हजार रुपये से बढ़ाकर 51 हजार रुपये किया था। अब राज्य सरकार ने तीलू रौतेली पुरस्कार की सम्मान राशि को 51 हजार रुपये से बढ़ाकर 75 हजार रुपये करने का निर्णय लिया है। इसी प्रकार आंगनबाड़ी कार्यकत्री पुरस्कार की सम्मान राशि भी 51 हजार रुपये से बढ़ाकर 61 हजार रुपये की जाएगी। उन्होंने कहा कि यह वृद्धि केवल पुरस्कार राशि में बढ़ोतरी नहीं, बल्कि प्रदेश की मातृशक्ति के सेवा, समर्पण और योगदान के प्रति सरकार के सम्मान का प्रतीक है।

मुख्यमंत्री ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों के प्रारंभिक विकास, पोषण, स्वास्थ्य और संस्कारों में आंगनबाड़ी केंद्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सरकार की योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर रही हैं। राज्य सरकार ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, मिनी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं के मानदेय में वृद्धि की है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेय 7,500 रुपये से बढ़ाकर 9,300 रुपये, मिनी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेय 4,500 रुपये से बढ़ाकर 6,250 रुपये तथा सहायिकाओं का मानदेय 3,550 रुपये से बढ़ाकर 5,250 रुपये किया गया है। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को सुपरवाइजर के पद पर पदोन्नति का प्रावधान भी किया गया है।

कहा कि राज्य सरकार बेटियों के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा, पोषण, सुरक्षा और स्वरोजगार तक हर स्तर पर उनके साथ खड़ी है। राज्य की मातृशक्ति को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि जब उत्तराखंड की बहनें और बेटियां सशक्त होंगी, तभी प्रदेश को देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य बनाने के संकल्प को पूर्ण किया है।

डायरेक्टर शकील रेप के आरोप में अरेस्ट

मुंबई। मशहूर डायरेक्टर शकील नूरानी पर एक 33 साल की अभिनेत्री ने दुष्कर्म के आरोप लगाए हैं। अभिनेत्री की शिकायत के बाद डायरेक्टर को मुंबई पुलिस ने अरेस्ट कर लिया है और कोर्ट ने उन्हें 12 अगस्त तक पुलिस कस्टडी में भेज दिया है।

फिल्म जोरू का गुलाम सहित कई पुरानी और चर्चित हिंदी फिल्मों का निर्देशन कर चुके मशहूर डायरेक्टर शकील नूरानी को मुंबई की मालवानी पुलिस ने यौन उत्पीड़न के मामले में अरेस्ट किया है। शकील नूरानी (73) पर 33 साल की एक्ट्रेस ने रेप और यौन उत्पीड़न के आरोप लगाते हुए मलवणी पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। अभिनेत्री की शिकायत पर मुंबई पुलिस ने निर्देशक को गिरफ्तार कर

लिया है। शकील नूरानी को अरेस्ट करने के बाद पुलिस ने उन्हें कोर्ट के सामने पेश किया, जहां से उन्हें 12 अगस्त तक की पुलिस कस्टडी में भेज दिया गया है। शकील पर आरोप है कि फिल्म प्रोजेक्ट पर चर्चा के बहाने शकील ने एक्ट्रेस को अपने घर बुलाया था।

मामले पर पुलिस ने जानकारी देते हुए कहा कि निर्देशक शकील नूरानी ने एक अपकमिंग फिल्म के प्रोजेक्ट पर चर्चा करने के बहाने एक 33 साल की अभिनेत्री को मलवणी स्थित अपने घर बुलाया था। आरोप है कि वहां उन्होंने महिला का यौन उत्पीड़न किया। इस मामले में महिला को कथित तौर पर नशीला पदार्थ देने और बाद में एक कथित वीडियो के जरिए उसे धमकाने के आरोप भी शामिल हैं।

इस केस में मलवणी पुलिस ने शकील नूरानी के खिलाफ मामला दर्ज किया है। गिरफ्तारी के बाद शकील नूरानी को कल मालवनी पुलिस ने बोरीवली हॉलीडे कोर्ट में पेश किया था, जहां उन्हें 12 अगस्त तक पुलिस कस्टडी में भेज दिया है। अब देखने वाली बात होगी कि इस केस में आगे क्या होता है।

'मामा' ने बचाई 17 वर्षीय अभिजीत की जिंदगी

समाजसेवी मोहन खत्री ने निःशुल्क उपलब्ध कराईं जीवनरक्षक दवाइयां

संवाददाता

देहरादून। गंभीर बीमारी से जूझ रहे 17 वर्षीय अभिजीत की जिंदगी बचाने में चिकित्सा टीम के साथ समाजसेवी मोहन खत्री की मानवीय पहल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मूल रूप से सुंदरनगर, जमशेदपुर (पूर्वी सिंहभूम, झारखंड) निवासी अभिजीत के प्लेटलेट्स बेहद कम हो गए थे और उसकी हालत गंभीर बनी हुई थी।

आर्थिक रूप से कमजोर परिवार इलाज के लिए हरिद्वार जिला अस्पताल, रुड़की, एम्स, जौलीग्रांट और इंद्रेश अस्पताल तक भटकता रहा। अभिजीत के पिता देवनाथ होटल में काम कर परिवार का पालन–पोषण करते हैं। महंगे इलाज का खर्च उठाना उनके लिए बेहद मुश्किल था।

ऐसे कठिन समय में समाजसेवी मोहन खत्री ने मदद के लिए हाथ बढ़ाया। उन्होंने करीब 40 हजार रुपये की जीवनरक्षक दवाइयां और आवश्यक मेडिकल सामग्री उपलब्ध कराई।

दून अस्पताल के डॉ. अशोक, उनकी टीम और अस्पताल के स्टाफ की मेहनत, समय पर मिले उपचार और करीब 30 दिनों तक चले इलाज के बाद अभिजीत की हालत में सुधार हुआ है। मोहन खत्री पिछले कई वर्षों से समाजसेवा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वह करीब 30 वर्षों से रेड क्रॉस सोसाइटी से जुड़े हैं और पिछले पांच वर्षों से कोषाध्यक्ष के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। उत्तराखंड राज्य आंदोलन में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही है। इसके अलावा वह अब तक करीब 150 रक्तदान शिविरों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुके हैं।

स्थानीय लोगों के बीच सेवा कार्यों के चलते मोहन खत्री को स्नेह से मामा के नाम से भी जाना जाता है। अभिजीत की मदद की इस पहल को इंसानियत और समाजसेवा की मिसाल के रूप में देखा जा रहा है।

समाज के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा जरूरी : सीएम

सीएम ने उत्तराखण्ड क्षत्रिय कल्याण समिति की वेबसाइट एवं क्षत्रिय जागरण स्मारिका का किया विमोचन

संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को मुख्यमंत्री आवास में उत्तराखण्ड क्षत्रिय कल्याण समिति, देहरादून की वेबसाइट एवं क्षत्रिय जागरण स्मारिका का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री ने क्षत्रिय कल्याण समिति के सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह समिति, समाज को जागरूक करने और जरूरतमंद लोगों तक सहायता पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने समिति द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर आगे बढ़ने से प्रदेश को नई दिशा दी जा सकती है। उन्होंने युवाओं से भी सामाजिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी करते हुए उत्तराखण्ड के विकास में अपना योगदान देने का आह्वान किया।कहा कि समाज के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से समाज में बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने, उन्हें बेहतर अवसर उपलब्ध कराने तथा विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने का आह्वान किया। बच्चों में संस्कार, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारियों की भावना विकसित करना भी आवश्यक है, ताकि वे समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सकें। इस अवसर पर विधायक सुरेश सिंह चौहान, दिगंबर सिंह नेगी, गोविंद बिष्ट, सोहन सिंह नेगी, आशा असवाल, धनपाल रावत, किशन भंडारी, प्रताप सिंह बिष्ट, चंदन सिंह मौजूद रहे।

ढोल वादकों की भूख हड़ताल खत्म

मंदिर समिति ने किया वेतन बढ़ोतरी व नियमितीकरण का आश्वासन

संवाददाता

ऊखीमठ। केदारनाथ की पंच गद्दी स्थल ओंकारेश्वर मंदिर परिसर में ढोल वादकों की अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल समाप्त हो गई। बीकेटीसी के आश्वासन के बाद वादकों ने हड़ताल वापस ले ली।

बता दें कि अपनी 5 मांगों को लेकर विरेन्द्र लाल, विजय लाल, विजयपाल, राजू लाल और सतेश्वरी देवी सहित 6 परिवारों के ढोल वादक भूख हड़ताल पर बैठे थे। उनकी मुख्य मांगें वेतन में बढ़ोतरी, नियमितीकरण, परंपरागत हकों को लागू करना और बाजीगर समाज के साथ भेदभाव बंद करना थीं।

केदारनाथ बद्रीनाथ मंदिर समिति के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी और उपाध्यक्ष विजय कपरवाण ओंकारेश्वर मंदिर पहुंचे। उन्होंने धरने पर बैठे सभी वादकों से मुलाकात की और वीडियो के माध्यम से आश्वासन दिया कि उनकी सभी मांगों को अगले महीने होने वाली मंदिर समिति की बोर्ड बैठक में रखा जाएगा और जल्द समाधान किया जाएगा।

बीकेटीसी अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने कहा कि ढोल वादकों की मांगें जायज हैं। उनकी वेतन में बढ़ोतरी की जाएगी और मंदिर समिति की ओर से रहने के लिए एक कमरा भी दिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि वार्ड नंबर एक गांधीनगर के सतपाल जो पूर्व में भगवान मध्यमहेश्वर की चल विग्रह डोली के साथ ढोल वादक के रूप में गए थे और जिनका हृदय गति रुकने से निधन हो गया था, उनके परिवार को भी उचित धनराशि और लाभ दिया जाएगा। इसके साथ ही सभी ढोल वादकों की नियुक्ति के लिए शासन–प्रशासन को रिक्तियां भेजी जाएंगी ताकि उनका नियमितीकरण हो सके।

मंदिर समिति के आश्वासन पर भरोसा करते हुए ढोल वादक विरेन्द्र लाल और विजय लाल ने भूख हड़ताल समाप्त करने की घोषणा की। केदारनाथ विधायक आशा नौटियाल ने सभी वादकों को जूस पिलाकर उनका अनशन तुड़वाया। इस मौके पर दर्जाधारी चंडी प्रसाद भट्ट, मंदिर समिति उपाध्यक्ष विजय कपूरवाण, नव निर्वाचित सभासद चंद्रमोहन उखियाल और अन्य पदाधिकारी भी मौजूद थे।

डुबकी लगाते ही गंगा के तेज बहाव में समाया कांवड़िया

संवाददाता, हरिद्वार। कांवड़ मेले में हादसे भी हो रहे हैं. रविवार को हरकी पैड़ी के पास धनुष पुल के नीचे गंगा स्नान के दौरान एक कांवड़िया तेज बहाव की चपेट में आकर गहरे पानी में समा गया। कांवड़िया रेलिंग के बाहर खड़े होकर गंगा में डुबकी लगा रहा था, जैसे ही उसने पानी में छलांग लगाई, तेज धारा उसे अपने साथ बहाकर ले गई। घटना के बाद मौके पर अफरा–तफरी मच गई। जल पुलिस राहत बचाव की टीम मौके पर पहुंची और गंगा में कांवड़िए की तलाश शुरू कर दी। जल पुलिस के जवान बोट और अन्य संसाधनों की मदद से कांवड़िए की तलाश में जुटे हैं। साथ ही पुलिसकर्मी मौके पर मौजूद लोगों से कांवड़िए के संबंध में जानकारी जुटा रहे हैं। मामले जुड़ा एक वीडियो भी सामने आया है, जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। बताया जा रहा है कि नहाने के दौरान मौके पर मौजूद एक शिवभक्त वीडियो बना रहा था और उसने कांवड़िए के गंगा में डूबने का वीडियो भी बना लिया।

उत्कृष्ट कार्य करने वाले डाककर्मी सम्मानित

बदलते दौर के साथ बदल रहा डाक विभागः रावत

संवाददाता

ऋषिकेश। राष्ट्रीय बचत अभिकर्ता संगठन, ऋषिकेश के तत्वावधान में स्वतंत्रता दिवस के पूर्व अवसर पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाले डाक विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्मृति चिह्न और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर पोस्टमास्टर यूएस रावत, डिप्टी पोस्टमास्टर खजान सिंह, पोस्टल असिस्टेंट मोहित ध्यानी, जयदीप नेगी, विपिन कुमार और प्रकाश सिंह कृषाली को सम्मानित किया गया। पोस्टमास्टर यूएस रावत ने कहा कि डाकघर में आम जनता के लिए कई उपयोगी बचत योजनाएं संचालित की जा रही हैं। लोगों को इन योजनाओं का लाभ उठाते हुए अधिक से अधिक बचत करनी चाहिए। उन्होंने डाकघर में उपलब्ध बैंकिंग, धन जमा–निकासी और एटीएम सहित विभिन्न सेवाओं की जानकारी दी। डिजिटल दोर में निजी करियर और ई–कॉमर्स कंपनियों की भारती प्रतिस्पर्धा के बीच डाक विभाग अब केवल पत्र पहुंचने वाली संस्था नहीं रह गया है त्योहारों के अनुसार अनुरूप नई सेवाएं शुरू कर विभाग ग्राहकों को आकर्षित करने की रणनीति पर काम कर रहा है।

डिप्टी पोस्टमास्टर खजान सिंह ने डाकघर की विभिन्न सेवाओं एवं योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि डाकघर आम जनता को पत्र–पार्सल, डाक टिकट, पैकेजिंग और स्टेशनरी सहित अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराता है।

संगठन के अध्यक्ष केके सचदेवा ने कहा कि मुख्य डाकघर ऋषिकेश में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रसिद्ध गायक गोपाल भटनागर ने देशभक्ति गीत है प्रीत जहां की रीत सदा से की। अभिकर्ता अजय ब्रेजा ने गीत और हंसराज मंदोलिया ने कविता प्रस्तुत की। संगठन अध्यक्ष ने मुख्य अतिथि एकांत गोयल को भी स्मृति चिह्न व शॉल भेंटकर सम्मानित किया।

इस मौके पर संरक्षक पूर्णिमा वर्मा, अजय कुमार गुप्ता, कार्यक्रम संयोजक परीक्षित मेहरा, अजीत पुंडीर, शिवम श्रीवास्तव, वीरा देवी, गीता सचदेवा, गोल्डी ब्रेजा, अनीता रैना, संगीता, विशेष गोदियाल, प्रियंका, ममता, भगत सिंह, पवन नौटियाल, दीपक उनियाल, रीना ढींगरा ,शैला डंगवाल, रिंकी सिंह, रेखा चौहान ,शशि नौटियाल, पूजा नैठानी, आशा अग्रवाल, ममता पंवार ,मंजू शर्मा, नीलम डंगवाल, रविंद्र भारद्वाज, कंचन बंसल, सरस्वती रावत ,रेखा शुक्ला विजय रावत आदि मौजूद थे।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।